

01.

भारतीय प्रागैतिहासिक संस्कृतियों की प्रमुख विशेषताएँ

1. प्रधान-संस्कृति टीलों मे

- (a) कई महत्वपूर्ण पुरातत्त्वीय संस्कृतियाँ उत्तरोत्तर पाई जाती हैं।
- (b) कई पुरातत्त्वीय संस्कृतियों का प्रदर्शन तो है पर उनमें से केवल एक संस्कृति प्रधान होती है।
- (c) केवल एक महत्वपूर्ण संस्कृति पाई जाती है।
- (d) एक प्रमुख धार्मिक स्मारक का होना अनिवार्य है।

NTA UGC NET/JRF Dec 2020/June 2021 Shift-II

Ans. (b) : टीलों के नीचे पुरानी बस्तियों एवं संस्कृतियों के अवशेष पाए जाते हैं। ये संस्कृतियाँ कई प्रकार की हो सकती हैं- एकल संस्कृतियाँ, मुख्य संस्कृतिक और बहु संस्कृतिक। एकल संस्कृतिक टीलों में सर्वत्र एक ही संस्कृति दिखाई देती है। कुछ टीले केवल चिह्नित धूसर मृदभांड अर्थात् पेन्टेड ग्रे वेअर (P.G.W.) संस्कृति का परिचायक है। कुछ सातवाहन संस्कृति के और कुछ कुषाण संस्कृति के हैं। मुख्य (प्रधान) संस्कृति टीलों में एक संस्कृति की प्रधानता रहती है और अन्य संस्कृतियाँ जो पूर्व काल की भी हो सकती हैं और उत्तर काल की भी विशेष महत्व की नहीं होती है। बहु-संस्कृतिक टीलों में उत्तरोत्तर अनेक संस्कृतियाँ पायी जाती हैं जो कभी-कभी एक दूसरे के साथ-साथ चलती हैं। रामायण और महाभारत की भाँति खोदे गये टीले का उपयोग संस्कृति के भौतिक पक्षों के अध्ययन में किया जा सकता है। टीले की खुदाई दो तरह से की जा सकती है- अनुलंबत और क्षैतिज।

2. निम्नलिखित में नवपाषाण युग के स्थलों में हड्डियों से बने औजार कहाँ पाए गए हैं?

- | | |
|-------------|-------------------|
| (A) गुफकराल | (B) सरूतरू |
| (C) चिराँद | (D) दाओजलि हेडिंग |
- नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
- (a) (A), (B), (C), (D)
 - (b) केवल (A) और (C)
 - (c) केवल (B), (C) और (D)
 - (d) केवल (A), (C) और (D)

NTA UGC NET/JRF Dec 2020/June 2021 Shift-II

Ans. (b) : इतिहास का विभाजन प्रार्गेतिहासिक, आधारेतिहासिक तथा ऐतिहासिक काल तीन भागों में किया गया है। प्रार्गेतिहासिक काल की परिधि में 'नवपाषाण' कालीन सम्भवताएँ आती हैं। नवपाषाण कालीन निम्न स्थलों से हड्डियों से बने औजार मिलते हैं। जिनमें गुफकराल, चिराँद प्रमुख हैं।

गुफकराल- यह स्थल कश्मीर प्रान्त में स्थित है। इसकी खुदाई 1981 ई. में ए.के. शर्मा ने करवाई थी। यहाँ से भेड़-बकरी आदि जानवरों की हड्डियाँ तथा उनके बने उपकरण प्राप्त हुए हैं। जैसे - हड्डी की बनी सुइयाँ। यहाँ के उपकरण ट्रैप पत्थर पर बनी कुल्हाड़ी, बंसुली, खुरपी, छेनी, कुदाल आदि हैं।

चिराँद- मध्य गंगा घाटी स्थल पर महत्वपूर्ण नव पाषाणकालीन स्थल चिराँद बिहार के छपरा जिले में स्थित है। यहाँ के उपकरणों में

पॉलिसदार पत्थर की कुल्हाड़ी, सिलबट्टे, हथौड़े, हड्डी तथा सींग के बने छेनी, बरमा, बाण, कुदाल, सूई, चूड़ी आदि।

सरूतरू- गुवाहाटी से 25 किमी दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इसके उत्तरोत्तर के दोरान कुल्हाड़ी, जैसी सामग्री मिली। यहाँ से मृदभांड भूरे और धूसर रंग के मिले हैं जिन पर रस्सी का निशान है। यह नवीन नवपाषाण कालीन स्थल है।

दाओजलि हेडिंग- यह असम में स्थित है। यहाँ से 45 सेमी. मोटे निक्षेप नवपाषाण कालीन लकड़ी के बने कुल्हाड़ी के अवशेष तथा पत्थरों के कुल्हाड़ी, छेनी, सिलबट्टा, ओखली, मूसल तथा हाथ के बने मृदभांडों पर लाल रंग का मुहर देखा जा सकता है।

3. नीचे दो कथन दिए गए हैं :

कथन (I) : फावड़ा और हंसिया, छोटे शस्त्र एवं घोड़ों के लौह उपकरण महापाषाण युग के स्थलों से मिले हैं।

कथन (II) : मास्की और नागार्जुनकोण्ड महापाषाण युग के स्थल हैं।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (a) कथन (I) और कथन (II) दोनों सत्य हैं
- (b) कथन (I) और कथन (II) दोनों असत्य हैं
- (c) कथन (I) सत्य है, लेकिन कथन (II) असत्य है
- (d) कथन (I) असत्य है, लेकिन कथन (II) सत्य है

NTA UGC NET/JRF Dec 2020/June 2021 Shift-I

Ans. (a) : नवपाषाण युग की समाप्ति के पश्चात् दक्षिण में जिस संस्कृति का उदय हुआ, उसे वृहत अथवा महापाषाण संस्कृति कहा जाता है। इस संस्कृति के लोग अपने मृतकों के अवशेषों को सुरक्षित रखने के लिए बड़े-बड़े पत्थरों का प्रयोग किया करते थे। वृहतपाषाण को मेगालिथ कहा जाता है। ये कृषि कर्म से भली-भाँति परिचित थे। उनके द्वारा उत्पादित प्रमुख अनाज चावल, जौ, चना, रागी आदि थे। गाय, बैल, भेड़, बकरी, घोड़े आदि इनके पालतू पशु थे। वे लोहे के उपकरणों का प्रयोग करते थे। समाधियों की खुदाई में विविध प्रकार के लौह उपकरण जैसे तलवार, कटार, त्रिशूल, चपटी कुल्हाड़ीयाँ, फावड़े, छेनी, हंसिया, चाकू, भाला आदि पाये गये। साथ ही छोटे शस्त्र एवं घोड़ों के लौह उपकरण भी मिले हैं। महापाषाण युग से संबंधित बहुत से महापाषाणिक स्थल मिले हैं जिसमें कर्णाटक से मास्की, ब्रह्मागिरि, हल्लूर तथा आन्ध्रप्रदेश से नागार्जुनीकोण्ड, कदम्बपुर आदि महत्वपूर्ण हैं। दिया गया कथन I और II दोनों सही हैं।

4. इसमें से ताम्रपाषाण युग का कौन सा स्थल राजस्थान में स्थित है ?

- (a) सोनगाँव
- (b) एरण
- (c) चन्दोली
- (d) गणेश्वर

NTA UGC NET/JRF Dec 2020/June 2021 Shift-I

Ans. (d) : जिस काल में ताँबा और पत्थर के हथियारों का प्रयोग एक साथ होता है, उस काल को 'ताप्रपाषाण काल' कहते हैं। यह काल प्राक्-हड्ड्या हड्ड्या तथा उत्तर-हड्ड्या काल तक फैली है। गार्डन चाइल्ड ने अपनी पुस्तक 'WHAT HAPPEND IN HISTORY' में ताँबे के महत्व को बताया है। उत्तर भारत में पाषाणकालीन संस्कृतियों के बाद ताप्रपाषाण कालीन संस्कृति का प्रचलन हुआ, जबकि दक्षिण भारत में पाषाण कालीन संस्कृति के बाद सीधे लोह काल की शुरुआत होती है।

गणेश्वर सभ्यता - यह राजस्थान के सीकर जिले के कांतली नदी के उदगम स्थल पर स्थित है। यह सभ्यता 2800 ई.पू. में विकसित हुई थी। यह ताप्रयुगीन संस्कृतियों में सबसे पुरानी है, इसीलिए इसे ताप्र युगीन संस्कृति की जननी कहा जाता है। इसके प्रमुख स्थल - अहाङ्क, गिलुंद मर्मा एवं बालाथल हैं। इसका उत्खनन 1977 में आर.सी. अग्रवाल और विजय कुमार ने किया था।

सोनगाँव - यह ताप्र पाषाणकालीन स्थल 'जोर्वे संस्कृति' के अन्तर्गत आता है। पुणे में सोन गाँव, इनामगाँव और चंदोली नामक महत्वपूर्ण जोर्वे संस्कृति के स्थल हैं।

एरण - यह ताप्र पाषाणकालीन स्थल 'मालवा/कायथा' संस्कृति के अन्तर्गत आता है। इसके निम्न क्षेत्र हैं - नागदा, नवादा, एरण और गुणरिया। इसका अध्ययन - बी.एस.वाकांकर ने किया था।

5. मध्य पुरापाषाण काल के पाषाण उपकरण बने थे

- | | |
|--------------|--------------|
| (a) कोर से | (b) फलक से |
| (c) ब्लेड से | (d) ताप्र से |

UP PGT 2021

G.I.C. Lect. Exam 2009

Ans. (b) : मध्य पुरापाषाण काल में क्वाटर्जाइट पत्थरों के स्थान पर जैस्पर, चर्ट, फिल्टर आदि के पत्थर प्रयुक्त होने लगे। इस समय उद्योग मुख्यतः शल्क से बनी वस्तुओं का था। इस समय के मुख्य औजार फलक, बेधनी, छेदनी और खुरचनी थे। फलकों की अधिकता के कारण इस काल को फलक संस्कृति की संज्ञा दी गयी। फलक एक प्रकार का औजार होता था, जिसे पत्थर को तोड़कर बनाया जाता था।

6. निम्नलिखित स्थलों में कौन एक स्थल नवपाषाण काल से सम्बन्धित है?

- | | |
|------------|-------------------|
| (a) पैसरा | (b) बाघोर |
| (c) सेनुआर | (d) सराय नाहर राय |

UP PGT 2021

Ans. (c) : नवपाषाण युग के स्थल निम्न हैं -

- उत्तर-पश्चिम भारत में - (बलुचिस्तान) - मेहरगढ़, किले गुल मुहम्मद, रानाघुंडई, जलीलपुर, सरायखोला।
- कश्मीर में - (झेलम घाटी) - बुर्जहोम, गुफकराल।
- उत्तरी भारत - कोल्डिहवा (उ.-प्र.), महगड़ा (उ.-प्र.), चिराँद (बिहार), सेनुआर (बिहार)।
- पूर्वी भारत - पश्चिम बंगाल में पाण्डुराजारढेरी, सरुतरु (অসম), मारकडोला (অসম)।
- प्रायद्वीपीय भारत - ब्रह्मगिरि, हल्लूर, कोडेकाल, कूपगल, मास्की, संगनकल्लु, नागार्जुनकोंडा, पिक्लीहल व उत्तरू, पैद्यमपल्ली (తமில்நாடு)।

7. भीमबेटका में किस काल से पाषाण चित्रों का बनना प्रारम्भ हुआ?

- | | |
|-------------------|-----------------------|
| (a) मध्यपाषाण से | (b) मध्य पुरापाषाण से |
| (c) ताप्रपाषाण से | (d) नवपाषाण से |

UP PGT 2021

Ans. (a) : मध्य पाषाण युग का आरम्भ ई. पू. 9000 के आस-पास हुआ। भारत में मध्य पाषाण काल के विषय में जानकारी सर्वप्रथम 1867 ई. में हुई जब सी.एल. कालाइल ने विस्थ्य क्षेत्र से लघु पाषाण उपकरण खोज निकाले। इसके पुरास्थल राजस्थान, गुजरात, उ.प्र., पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक एवं मध्य प्रदेश से प्राप्त हुए हैं। मध्य प्रदेश में पंचमढ़ी के निकट मध्य पाषाण युग के दो शैलाश्रय मिले हैं, जिनका नाम जम्बूद्वीप और डोरोथी द्वीप है। मध्य प्रदेश के भीमबेटका से प्राप्त पाषाण चित्र एवं शैल चित्र मध्य पाषाण युग के द्योतक हैं।

8. निम्न पुरास्थलों में कौन-सा महाराष्ट्र में नहीं स्थित है?

- | | |
|--------------|--------------|
| (a) नेवासा | (b) इनामगाँव |
| (c) दायमाबाद | (d) माहेश्वर |

UP PGT 2021

Ans. (d) : माहेश्वर मध्य प्रदेश के खारगौन जिले में स्थित एक ऐतिहासिक नगर तथा प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। यह नर्मदा नदी के किनारे पर बसा है। माहेश्वर को 'महिष्मति' नाम से भी जाना जाता है। प्राचीन समय में यह शहर होल्कर राज्य की राजधानी था। माहेश्वर का हिन्दू धार्मिक ग्रन्थ 'रामायण' तथा 'महाभारत' में भी उल्लेख मिलता है।

9. निम्नलिखित में किसने उत्तर प्रदेश में प्रथम नवपाषाण उपकरण प्राप्त किया?

- | | |
|----------------------|---------------------|
| (a) जी. आर. शर्मा | (b) मॉर्टिमर व्हीलर |
| (c) रॉबर्ट ब्रूस फुट | (d) ले मसूरिये |

UP PGT 2021

Ans. (d) : नवपाषाण या नियोलिथिक शब्द का प्रयोग सबसे पहले जॉन लुब्बाक ने 1865 में प्रकाशित पुस्तक प्रीहिस्टोरिक टाइम्स में किया था। विश्व के सन्दर्भ में नवपाषाण युग 9 हजार ई. पू. से प्रारम्भ होता है लेकिन भारत में इसकी शुरुआत 7 हजार ई. पू. में हुई। सर्वप्रथम 1860 ई. में 'ले मेसुरिये' (Le-Mesurier) ने इस काल का प्रथम प्रस्तर उपकरण उत्तर प्रदेश की टोंस नदी घाटी से प्राप्त किया।'

10. 30 मई, 1863 को राबर्ट ब्रूस फुट ने मद्रास के पास स्थित पल्लवरम् से किस पुरापाषाणिक परम्परा के उपकरण खोजे थे?

- | |
|----------------------------------|
| (a) ब्लेड व्हूरिन परम्परा |
| (b) ब्लेड फ्लेक-स्क्रेपर परम्परा |
| (c) हैण्ड एक्स-क्लीवर परम्परा |
| (d) माइक्रोलिथिक परम्परा |

UPPSC GIC 2021

Ans. (c) : 30 मई, 1863 को राबर्ट ब्रूसफुट ने मद्रास के पास स्थित पल्लवरम् से हैण्ड-एक्स, क्लीवर परंपरा के पुरापाषाणिक उपकरणों को खोजा था।

जनवरी 1864 ई. में फिर से पल्लवरम् से कई उपकरण प्राप्त हुए हैं हस्तकुठार संस्कृति को मद्रास संस्कृति या मद्रास उद्योग भी कहा जाता है।

11. भारत में सर्वप्रथम पूर्वपाषाणकालीन उपकरण राबर्ट ब्रूस फुट को मिला था :

- | | |
|-----------------|-----------------|
| (a) 1860 ई. में | (b) 1863 ई. में |
| (c) 1873 ई. में | (d) 1878 ई. में |

उत्तर-(b)

PGT History, 2005

UPPCS (Pre) Indian History, 2003

व्याख्या—उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 1863 में राबर्ट बूसफुट को हस्तकुठार मिला था :

- (a) बदमदुरै (b) अत्तिरम्पक्कम
(c) पल्लवरम (d) संगनकल्लू

उत्तर - (c)

PGT History, 2009
(UGC Net.- III Paper Dec. 2013)
PGT History, 2013

व्याख्या- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. मध्य पाषाणिक पुरास्थल 'दमदमा' के पशुओं की हड्डियों का अध्ययन किसके द्वारा किया गया था?

- (a) के.एन. प्रसाद और पी. यादगिरि
(b) डी.आर.शाह और ए.के. शर्मा
(c) शान्तनु वैद्य और पंकज गोयल
(d) पी.के. थॉमस और पी.पी. जोगलेकर

UPPSC GIC 2021

Ans. (d) : मध्य पाषाणिक स्थल दमदमा मध्य गंगा घाटी क्षेत्र में उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में स्थित है। दमदमा का उत्खनन 1982 से 1987 के मध्य प्रो. जी. आर.शर्मा के नेतृत्व में किया गया। यहाँ से पाषाणोपकरण एवं पशुओं की हड्डी एवं सींग प्राप्त हुए हैं। यहाँ के पशुओं की हड्डियों का अध्ययन पी.के. थॉमस और पी.पी. जोगलेकर ने किया।

14. झील के किनारे स्थित प्रारम्भिक कृषि स्थल है-

- (a) चिराँद (b) लहुरादेव
(c) मेहरगढ़ (d) महदहा

UPPSC GIC 2021

Ans. (b) : उत्तर प्रदेश के संत कबीरनगर जिले में झील के किनारे स्थित लहुरादेव से भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि किए जाने के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं। यहाँ से चावल उत्पादन के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं। महत्वपूर्ण है कि मेहरगढ़ से प्राप्त कृषि का साक्ष्य 7000 ई. पू. का है, जबकि लहुरादेव का 9000-7000 ई. पू. का कृषि का साक्ष्य उपलब्ध है।

15. निम्नलिखित में से कौन-से दो उत्खनित अशुलियन स्थल हैं?

- (1) चिरकी निवासा (2) चिराँद
(3) बाघोर (4) हुसंगी
(a) (1) और (2) (b) (1) और (3)
(c) (1) और (4) (d) (2) और (3)

UP Higher Asst. Prof. (Anc. History) 2021
(UGC Net.- III Paper Dec. 2014)

Ans. (c) : चिरकी-नेवासा और हुसंगी उत्खनित ऐशूलियन स्थल हैं। ऐशूलियन उपकरणों में हैंडएक्स, क्लीवर, स्क्रेपर आदि आते हैं जो ज्यादातर दक्षिण भारत और दक्कन में पाए गए हैं। महाराष्ट्र में स्थित चिरकी-नेवासा नामक स्थल से निम्न पुरापाषाण काल की प्राचीनतम तिथि ज्ञात हुई है। कर्नाटक में स्थित हुसंगी के तट से ओजार निर्माण केन्द्र के अवशेष मिले हैं।

16. निम्नलिखित स्थलों के सांस्कृतिक अनुक्रम को कालानुक्रम के अनुसार व्यवस्थित करें-

- (I) अहाड़ (II) बीरभानपुर
(III) श्रावस्ती (IV) गुफकराल

कूट :

- (a) (II), (IV), (I), (III) (b) (III), (IV), (II), (I)
(c) (I), (III), (IV), (II) (d) (IV), (II), (I), (III)

UP Higher Asst. Prof. (Anc. History) 2021
UPPCS (Pre) Indian History, 2009

Ans. (a) : प्रश्नानुसार दिए गए स्थलों का सांस्कृतिक क्रम बीरभानपुर, गुफकराल, अहाड़ और श्रावस्ती है। बीरभानपुर पश्चिम बंगाल में स्थित मध्यपाषाणिक स्थल है जिसका उत्खनन 1954 ई. में बी. बी. लाल ने किया था। गुफकराल कश्मीर में स्थित नवपाषाणिक स्थल है जिसका उत्खनन 1981 ई. में ए.के. शर्मा ने किया था। अहाड़ राजस्थान में बनास नदी घाटी में स्थित एक ताम्रपाषाणिक स्थल है जिसका उत्खनन सर्वप्रथम 1953 ई. में ए.के. व्यास ने किया था। श्रावस्ती महाजनपद काल और बुद्धकाल का एक महत्वपूर्ण नगर था जो कोसल महाजनपद की राजधानी थी।

17. निम्नलिखित में किस संस्कृति में मृतक के निचले पैर को दफनाने से पूर्व काट दिया जाता था?

- (a) जोर्वे संस्कृति में
(b) नवपाषाण संस्कृति में
(c) कायथा संस्कृति में
(d) चित्रित धूसर मृद्भाण्ड संस्कृति में

UP Higher Asst. Prof. (Anc. History) 2021

Ans. (a) : जोर्वे ताम्रपाषाणिक संस्कृति में मृतक के निचले पैर को दफनाने से पूर्व काट दिया जाता था। जोर्वे संस्कृति का विस्तार पश्चिमी महाराष्ट्र में था। दायमाबाद, जोर्वे, नेवासा, इनामगाँव चन्दौली, बहाल, प्रकाश आदि प्रमुख जोर्वे संस्कृति के स्थल हैं। जोर्वे संस्कृति यद्यपि ग्रामीण थी किन्तु इसकी कई बस्तियाँ जैसे दायमाबाद और इनामगाँव नगरीय अवस्था तक पहुँच गयी थीं। इनामगाँव से वृत्ताकार ज्ञोपिड़ियों के साक्ष्य मिले हैं।

18. निम्नलिखित मानव समूह में से कौन एक सबसे बुद्धिमान प्रकार माना जाता है?

- (a) होमो - हेबिलिस
(b) होमो - इरेक्टस
(c) होमो - इरगास्टर
(d) होमो - नियण्डरथैलेसिस

UP Higher Asst. Prof. (Anc. History) 2021

Ans. (d) : होमो नियण्डरथैलेसिस को सामान्यतः मध्यपुरापाषाण काल का मानव माना जाता है जो दिए गए विकल्पों में सबसे बुद्धिमान प्रकार का मानव है। होमो-नियण्डरथैलेसिस मानव ने ही सर्वप्रथम अग्नि का व्यापक रूप से प्रयोग किया तथा मृतकों का अंतिम संस्कार करने वाला प्रथम मानव यही था। होमो नियण्डरथैलेसिस मानव ने तन ढकने के लिए चमड़े से बने कपड़ों के प्रयोग शुरू किए। होमो इरेक्टस को निम्न पुरापाषाण काल का मानव माना जाता है।

19. मुच्छतल चिन्तामणि गवि, एक पुरातात्त्विक गुफा स्थल का संबंध निम्न से है :

- (a) निम्न पुरापाषाण संस्कृति
(b) मध्य पुरापाषाण संस्कृति
(c) उच्च पुरापाषाण संस्कृति
(d) मध्य पाषाण संस्कृति

UP Higher Asst. Prof. (Anc. History) 2021

Ans. (c) : मुच्छतल चिन्तामणि गवि पुरातात्विक गुफा स्थल आंध्र प्रदेश में स्थित एक उच्च पुरापाषाण कालीन स्थल है जहाँ से हड्डी-सींग से बने औजार सर्वाधिक संख्या में मिले हैं। आंध्र प्रदेश के अन्य उच्च पुरापाषाणिक स्थल रेनीगुट्टा, बेटमचैला, बेमुला, कर्नूल आदि हैं। कर्नूल के विलासुरग्राम गुफा से भारत में प्राचीनतम चूल्हे का अवशेष प्राप्त हुआ है। कर्नूल गुफाओं से मानव अस्तित्व तथा अग्नि के चिन्ह मिल हैं।

20. निम्नलिखित पुरापाषाणिक स्थलों को तिथि क्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए :

- | | |
|----------------------------|---|
| (I) ज्वालापुरम - 9 | (II) अतिरम्पक्कम |
| (III) ईशामपुर | (IV) जलालपुर और दीना नीचे दिए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए : |
| (a) (III), (II), (I), (IV) | (b) (II), (III), (IV), (I) |
| (c) (IV), (I), (III), (II) | (d) (I), (IV), (II), (III) |

UP Higher Asst. Prof. (Anc. History) 2021

Ans. (b) : प्रश्नानुसार दिए गए पुरापाषाणिक स्थलों का क्रम अतिरम्पक्कम, ईशामपुर, जलालपुर और दीना तथा ज्वालापुरम-9 है। अतिरम्पक्कम तमिलनाडु का सबसे समृद्ध पुरापाषाणिक स्थल है। 1863 ई. में यहाँ सर्वप्रथम किंग द्वारा उत्खनन किया गया। इसी तरह कर्नाटक में स्थित ईशामपुर पुरापाषाणकालीन औजार बनाने का अत्यन्त महत्वपूर्ण केन्द्र था। ज्वालापुरम-9 आंध्र प्रदेश के कुरुनुल जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण पुरापाषाणिक स्थल है। इसी प्रकार जलालपुर और दीना पाकिस्तान के रिवात घाटी में स्थित पुरापाषाणिक स्थल हैं।

21. निम्नलिखित में से कौन नवपाषाण स्थलों की तिथि छः सहस्राब्द ईसा पूर्व है?

- | | |
|-------------------|-------------------|
| (I) कोलिडहवा | (II) महगढ़ा |
| (III) टोकवा | (IV) पँचोह |
| (a) (I) और (II) | (b) (I) और (III) |
| (c) (II) और (III) | (d) (III) और (IV) |

UP Higher Asst. Prof. (Anc. History) 2021

Ans. (b) : बेलन घाटी में स्थित कोलिडहवा और टोकवा नवपाषाणिक स्थलों की तिथि 6000 ई.पू. है। कोलिडहवा के नवपाषाणिक स्थल से धान की खेती के साक्ष्य तथा जली हुई धान की बालियाँ प्राप्त हुई हैं। यहाँ के लोग चावल की जंगली तथा कृषि प्रजाति दोनों से परिचित थे जो 6000 ई.पू. के साक्ष्य हैं। मिजापुर में बेलन और अदवा नदी के संगम पर स्थित टोकवा स्थल से भी 6000 ई.पू. के कृषि के साक्ष्य प्रकाश में आए हैं।

22. निम्नलिखित में से कौन-सा मानव प्रकार निम्न पुरापाषाण संस्कृति से जुड़ा है ?

- | | |
|-------------------------|------------------|
| (a) होमो-हैबिलिस | (b) होमो-इरेक्टस |
| (c) होमो-नियण्डरथैलेसिस | (d) ग्रीमाल्डी |

UP Higher Asst. Prof. (Anc. History) 2021

Ans. (a&b) : होमो इरेक्टस और होमो हैबिलिस मानव का संबन्ध निम्न पुरापाषाण काल से है। इसी प्रकार होमो नियण्डरथल मानव का संबन्ध मध्य पुरा पाषाणकाल से जबकि होमो सेपियन्स मानव का संबन्ध उच्च पुरा पाषाण काल से माना जाता है। होमो इरेक्टस प्राचीनतम द्विपद मानव है तथा यहीं सीधा चलने वाला कपि मानव था। अग्नि के आविष्कार का श्रेय होमो इरेक्टस को ही दिया जाता है। मृतकों का अंतिम संस्कार करने वाला प्रथम मानव होमो नियण्डरथल था जबकि पहला आधिनिक और प्रज्ञ मानव होमो सेपियन्स को माना जाता है। आयोग ने अपने संशोधित उत्तरकुंजी में a और b दोनों विकल्प को सही माना है।

23. मध्यपाषाण कालीन उपकरणों के निर्माण में निम्न तकनीकों से कौन-सी पद्धति प्रयोग में नहीं ली जाती थी?

- | | |
|--------------------|------------------------|
| (a) दबाव तकनीक | (b) घात प्रतिघात तकनीक |
| (c) फ्लूटिंग तकनीक | (d) घर्षण तकनीक |

UP Higher Asst. Prof. (Anc. History) 2021

Ans. (d) : मध्य पाषाणकालीन उपकरण के निर्माण में फ्लूटिंग तकनीक, घात प्रतिघात तकनीक तथा दबाव तकनीक का प्रयोग किया जाता था। इस काल में घर्षण तकनीक का प्रयोग उपकरण निर्माण में नहीं किया जाता था। मध्य पाषाणकाल के उपकरण पुरा पाषाणकाल की तुलना में छोटे होने के कारण लघु पाषाण उपकरण कहे जाते थे। इन औजारों का निर्माण सामान्य रूप से समान्तर फलक वाले छोटे ब्लैडों पर क्वाटर्जाइट, चर्ट, चौल्सडेनी, जैस्पर, अगेट जैसे सिलिका पत्थरों से होता था।

24. भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग किस वर्ष में स्थायी विभाग बना?

- | | |
|----------|----------|
| (a) 1900 | (b) 1902 |
| (c) 1904 | (d) 1906 |

UP Higher Asst. Prof. (Anc. History) 2021

Ans. (d) : भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग की स्थापना 1861 ई. में वायसराय लॉर्ड कैनिंग के काल में हुई थी। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग को 1906 ई. में स्थायी बना दिया गया। 1871 ई. में जनरल कनिंघम को भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग का प्रथम महानिदेशक नियुक्त किया गया। कनिंघम मूलतः मुद्राशास्त्री थे। इन्हें भारतीय पुरातत्त्व का जनक भी कहा जाता है। दयाराम साहनी प्रथम भारतीय थे जो 1931 ई. में भारतीय पुरातत्त्व विभाग के महानिदेशक नियुक्त हुए थे।

25. जॉन मार्शल के बाद भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण का महानिदेशक किसे बनाया गया?

- | | |
|-----------------------|---------------------|
| (a) एच. हरग्रीव्स | (b) दयाराम साहनी |
| (c) जे.एफ. ब्लैकिस्टन | (d) मार्टिमर व्हीलर |

UP Higher Asst. Prof. (Anc. History) 2021

Ans. (a) : जॉन मार्शल के बाद भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण का महानिदेशक एच. हरग्रीव्स को बनाया गया। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग की स्थापना 1861 ई. में किया गया। जिसे 1906 ई. में स्थायी बना दिया गया। भारतीय पुरातत्त्व विभाग के प्रथम महानिदेशक 1871 ई. में कनिंघम को बनाया गया। जॉन मार्शल 1902-1928 तक पुरातत्त्व विभाग के महानिदेशक रहे इसके बाद एच. हरग्रीव्स 1928-1931 तक इसके महानिदेशक रहे। दयाराम साहनी 1931 ई. में इसके महानिदेशक बने जो प्रथम भारतीय थे।

26. निम्नलिखित में कौन पोटेशियम – आर्गन तिथिकरण के लिए उपयुक्त है?

- | | |
|--------------------|--------------|
| (a) जली हुई मिट्टी | (b) बेसाल्ट |
| (c) जली हुई हड्डी | (d) मृदभाण्ड |

UP Higher Asst. Prof. (Anc. History) 2021

Ans. (b) : बेसाल्ट पोटेशियम-आर्गन तिथिकरण के लिए उपयुक्त होता है। पोटेशियम-आर्गन विधि अत्यधिक पुरानी वस्तुओं की तिथि निर्धारित करने की विधि है। इस पद्धति में वस्तुओं में उपलब्ध रेडियोधर्मी पोटेशियम (K^{40}) तथा उसके विघटन से बने आर्गन (Ar^{40}) की मात्रा को मापक पैमाने के रूप में उपयोग किया जाता है। इस विधि का विकास 1950 ई. के लगभग डब्ल्यू जेन्टर ने किया। इस विधि द्वारा 30 हजार वर्ष पुरानी वस्तुओं से लेकर 30 करोड़ वर्ष तक पुरानी वस्तुओं की तिथि निर्धारित की जा सकती है।

27. मार्टिमर व्हीलर ने किस उत्खनन विधि की तुलना एक रेलगाड़ी की समय सारणी से की है, जिसकी गाड़ी का कोई पता नहीं है?
- शैर्षिक उत्खनन की विधि
 - क्षैतिज उत्खनन की विधि
 - समानान्तर उत्खनन की विधि
 - चतुष्पाद उत्खनन की विधि

UP Higher Asst. Prof. (Anc. History) 2021

Ans. (a) : मार्टिमर व्हीलर ने अनुलंब या शैर्षिक उत्खनन विधि की तुलना एक रेलगाड़ी की समय-सारणी से की है जिसकी गाड़ी का कोई पता नहीं है। उत्खनन की सामान्यतः 2 विधियाँ शैर्षिक व क्षैतिज हैं। शैर्षिक उत्खनन का अर्थ है सीधी खड़ी लम्बवत् खुदाई करना जिससे कि विभिन्न संस्कृतियों का कालक्रमिक तांता उद्घटित हो सके। यह सामान्यतः स्थल के कुछ भाग में ही सीमित रहता है। क्षैतिज उत्खनन का अर्थ है सारे टीले की या उसके वृहद भाग की खुदाई करना। इस तरह की खुदाई से उस स्थल की काल विशेष की संस्कृति का पूर्ण आभास पा सकते हैं।

28. निम्नलिखित सभ्यताओं में से कौन सी सभ्यता प्रथमतः ब्लैक एण्ड रेड वेयर संस्कृति के नाम से जानी जाती थी?
- बैराठ
 - गणेश्वर
 - आहड़
 - नोह

RPSC Asst. Prof. 2020 (II)

Ans. (c) : आहड़ सभ्यता वाले क्षेत्र में प्रारम्भिक रूप से प्रस्तर - युगीन मानव निवास करता था। प्राचीन शिलालेखों में आहड़ का पुराना नाम ताप्रवती अंकित है। ये लोग लाल, भूरे और काले मिट्टी के बर्तन काम में लेते थे जिन्हे उल्टी तपाई शैलौ में पकाया जाता था। मकान पक्की ईंटों के होते थे। पशुपालन इनकी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था। इस सभ्यता को दूसरे शब्दों में ब्लैक एण्ड रेड वेयर संस्कृति के नाम से जाना जाता है।

29. मानव जीवन में किस पाषाण युग को क्रांति कहा गया?
- मध्यपाषाण काल
 - नवपाषाण काल
 - उच्च पुरापाषाण काल
 - इनमें से कोई नहीं

UKPSC Lecutrer Mains 2020

Ans. (b) : नवपाषाण क्रांति विश्व मानव की पहली क्रांति थी। नवपाषाण युग में मानव ने कृषि कर्म करना तथा कृषि कर्म में सहायता के लिए पशुपालन एवं पशुचारण करना सीखा। उसने पथर से और तेज हथियार बनाया। मानव नदी पर बांध बनाकर सिंचाई व्यवस्था द्वारा सुचारू रूप से खेती करने लगा, ताप्र एवं कांस्य को गलाकर औजार बनाने लगा। व्यापार केन्द्र के रूप में नगर का निर्माण किया तब उसने सभ्यावस्था में प्रवेश किया। अगर इन तीनों क्रांतियों की विशेषताओं तथा उनके कारण निर्मित होने वाले समाजों के ऊपर ध्यान दिया जाय तब पता चलता है कि नवपाषाण कृषि क्रांति के कारण सरल समाज अस्तित्व में आया।

30. पथर उपकरण तकनीक, “अश्यलियन” किस वनमानुष प्रजाति द्वारा विकसित की गई थी?
- होमो सेपियन
 - होमो हैबिलिस
 - होमो इरेक्टस
 - होमो जॉर्जिकस

DSSSB PGT 10/07/2021

Ans. (c) : होमो इरेक्टस के औजारों में विविधता के साथ-साथ काफी परिष्कार दिखता है। वे दुधारी हस्तकुठार तथा तेज धार वाले कटने के औजार वाली संस्कृति के प्रणाला कहे जा सकते हैं। ओल्डुवाई तकनीक से बने अनगढ़ औजारों की तुलना में इरेक्टस के औजार काफी परिष्कृत थे। इस मानव को अश्यूलियन (एश्लूलियन) तकनीक का मानव कहा जाता है।

31. प्रसिद्ध मध्य पाषाण कालीन स्थल बागोर किस नदी के तट पर स्थित है?
- बनास
 - गम्भीरी
 - खारी
 - कोठारी

RPSC Asst. Prof. 2020 (II)

Ans. (d) : राजस्थान का सबसे प्रसिद्ध स्थल भीलवाड़ा जिले का बागोर स्थल है जहाँ से मध्य पाषाण कालीन स्थलों के अतिरिक्त प्राचीन पशुपालन के अवशेष प्राप्त हुए हैं। यह स्थल बनास नदी की सहायक कोठारी नदी के तट पर बसा है। इसका उत्खनन कार्य 1968-70 में डॉ विरेन्द्र नाथ मिश्र, डॉ. एल.एस. लेश्क व डेक्कन कालेज पूना तथा राजस्थान पुरातत्व विभाग के सहयोग से किया गया। यह स्थल एक पाषाण कालीन सभ्यता का माना जाता है बागोर सभ्यता से चौदह प्रकार की कृषि किए जाने के अवशेष मिले हैं।

32. भारतीय उपमहाद्वीप में धातु का पहला प्रमाण----- पर था।

- बिहार
- द्वक्कन
- बलूचिस्तान
- अरावली

DSSSB PGT 28/06/2021

Ans. (c) : भारतीय उपमहाद्वीप में मेहरगढ़ जो बलूचिस्तान में स्थित है यहाँ प्राचीन कृषि एवं पशुपालन जैसी व्यवस्था पायी गयी है। मेहरगढ़ 7000 ई.पू. का क्षेत्र है जहाँ से औजार और बर्तन भी पाये गये हैं। यहाँ डिल जो तांबे की बनी हुई है प्राप्त हुआ है। धातु के धारदार हथियार और औजार बनाने का प्रमाण पाया गया है। इससे सिद्ध होता है सर्वप्रथम धातु का प्रयोग यहाँ से शुरू हुआ होगा।

33. कायथा पुरास्थल किस नदी पर स्थित है ?

- बनास नदी
- बेतवा नदी
- केन नदी
- छोटी काली सिंध नदी

Haryana PGT 2020

Ans. (d) : कायथा संस्कृति उज्जैन (म.प्र.) में छोटी काली सिन्ध नदी के तट पर स्थित एक ताप्रपाषाणिक स्थल है। इसे हड्ड्या की कनिष्ठ और समकालीन माना जाता है। यहाँ एक घर में 29 कंगन और दो कुल्हाड़ी मिली है इसे मालवा संस्कृति भी कहते हैं। मालवा से उत्कृष्ट कोटी के लाल-काले मृदभांड मिले हैं। मालवा के एक पुरास्थल जिसकी खोज संकालिया ने किया था, नवदाटोली है। यह पूरे ताप्रपाषाणिक स्थलों में सबसे बड़ी ग्रामीण बस्ती है। कायथा संस्कृति पश्चिमी मध्य प्रदेश में स्थित है। वहाँ द. पू. राजस्थान में बनास (अहाड़) संस्कृति और पश्चिमी महाराष्ट्र जौर्वे संस्कृति विकसित हुई।

34. निम्नलिखित कथनों में से कौन सा भारत की ताप्रपाषाणिक संस्कृतियों के संबंध में असत्य है?

- ताप्र पाषाणिक संस्कृतियाँ मुख्य रूप से ग्रामीण संस्कृतियाँ थीं।
- ताप्र पाषाणिक संस्कृतियों के लोग ज्यादातर नदियों व पहाड़ियों के पास रहा करते थे।
- काले व लाल रंग के मृदभांड इन संस्कृतियों में व्यापक रूप से प्रयोग में लिये जाते थे।
- जोर्वे एक ताप्र पाषाणिक स्थल है जो मालवा संस्कृति से संबंधित है।

RPSC Asst. Prof. 2020 (I)

Ans. (*) : जोर्वे संस्कृति ताम्रपाषाणकालीन एक संस्कृति है जिसकी खोज एम.एन. देशपाण्डे ने की थी। जोर्वे संस्कृति महाराष्ट्र राज्य के अहमदनगर जिले में गोदावरी नदी की सहायक 'प्रवरा' नदी के तट पर स्थित है जो एक पुरातात्त्विक स्थल है। जोर्वे संस्कृति के प्रमुख स्थल चन्दोली, सोनगांव, इनामगांव, जोर्वे, नासिक तथा दायमाबाद हैं। इस संस्कृति का सम्बन्ध मालवा संस्कृति से नहीं है। क्योंकि मालवा मध्यप्रदेश की एक ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति है। अंतिम उत्तर कुंजी में आयोग ने इस प्रश्न को छिपाया है।

35. भारत में सोहन संस्कृति किस युग से सम्बन्धित है?

- (a) उच्च-पुरापाषाण युग से
- (b) मध्य-पुरापाषाण युग से
- (c) नव-पुरापाषाण युग से
- (d) निम्न-पुरापाषाण युग से

RPSC Asst. Prof. 2020 (I)

Ans. (d) : भारत में सोहन संस्कृति का उदय सिंचु नदी की एक छोटी सहायक नदी सोहन नदी से माना जाता है। प्रार्थिताहसिक अध्ययन के लिए इस नदी घाटी का विशेष महत्व माना जाता रहा है। 1928ई. में के.एन. वाडिया ने इस क्षेत्र से पूर्व पाषाण काल का उपकरण प्राप्त किया। इस दल ने कल्पीन घाटी से लेकर साल्ट रेज तक के विस्तृत क्षेत्र का सर्वेक्षण किया।

36. वह लक्षण जो नवपाषाण काल की विशिष्टता नहीं है:

- (a) घर्षक और पॉलिश युक्त उपकरण।
- (b) मध्य उपकरण 'कुल्हाड़ी'
- (c) पिछले युगों की तुलना में मृदभाण्ड निर्माण कला में उल्लेखनीय प्रगति।
- (d) अन्न पर बढ़ती निर्भरता

RPSC College Lect. 2016

Ans. (c) : नव पाषाणकाल मानव प्रौद्योगिकी के विकास की एक अवधि थी जिसका आरम्भ 9000 ई. पू. से माना जाता है। इस काल में मानव जीवन सभ्य समाज की ओर अग्रसर होने लगा। स्थाई जीवन पशुपालन घर्षण एवं पॉलिसदार युक्त उपकरणों से कृषि क्षेत्र में उन्नति हुई जिससे उत्पादकता में वृद्धि एवं अन्न पर निर्भरता बढ़ी। नवपाषाण काल के प्रमुख उपकरणों में मध्य उपकरण कुल्हाड़ी, (मध्य उपकरण, अर्थात्- प्रमुख/केन्द्रीय/विशेष), वसुली, खुर्ची, छेनी, कुदाल आदि हैं। विकल्प (c) गलत है क्योंकि पिछले युगों की तुलना में मृदभाण्ड निर्माण कला में प्रचुर मात्रा में वृद्धि हुई न की उल्लेखनीय रूप से प्रगति हुई।

37. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में पुरापाषाण काल के विषय में असत्य है?

- (a) पुरापाषाण कालीन स्थल समस्त भारत से मिले हैं।
- (b) पुरापाषाण कालीन स्थल गंगा और सिंधु के क्षारों से सर्वाधिक संख्या में मिले हैं।
- (c) पुरापाषाण कालीन स्थल मारवाड़ और मेवाड़ से प्राप्त हुए हैं।
- (d) डीडवाना में सांधी तलाव से पूर्व पुरापाषाण कालीन से उत्तर पुरापाषाण कालीन सामग्री के स्तर मिले हैं।

RPSC College Lect. 2016

Ans. (b) : पुरापाषाणकालीन स्थल भारतीय उपमहाद्वीप के लगभग सभी भागों से प्राप्त हुए हैं किन्तु गंगा एवं सिंधु नदी के क्षारों में प्रायः इनकी संख्या नगण्य है। पुरापाषाण कालीन स्थल राजस्थान क्षेत्र से प्रचुर मात्रा में मिले हैं जो मारवाड़, मेवाड़, चित्तौड़, अमरपुरा, सिंगी तालाब, डीडवाना से निम्न, मध्य एवं उच्च या उत्तर पुरापाषाणकालीन स्तर विन्यास के अवशेष प्राप्त होते हैं।

38. किसके नेतृत्व में ए एस आई द्वारा भारत में सर्वप्रथम उत्खनन आरंभ किया गया?

- | | |
|--------------------|-----------------------|
| (a) जॉन मार्शल | (b) एलेक्जेंडर कनिंघम |
| (c) मार्टिम व्हीलर | (d) एच डी सांकिलिया |

RPSC College Lect. 2016

Ans. (b) : A.S.I. द्वारा भारत में सर्वप्रथम एलेक्जेंडर कनिंघम ने उत्खनन आरम्भ करवाया था। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण सांस्कृतिक विरासतों के पुरातत्त्वीय अनुसंधान तथा संरक्षण के लिए संगठन है। इसका प्रमुख कार्य राष्ट्रीय महत्व के प्राचीन स्मारकों तथा पुरातत्त्वीय स्थलों और अवशेषों का रख-रखाव करना है। इसकी स्थापना 1861ई. में किया गया था। जिसका मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है। सिन्धु सभ्यता का सर्वप्रथम उत्खनन मार्शल ने करवाया था। राजस्थान आयोग द्वारा इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) माना गया है।

39. उपकरणों की खोज तथा नियोलिथिक युग में उनके कार्यान्वयन की जानकारी देने वाले रहे

- | | |
|-------------------|-------------|
| (a) ले मेसुरियर | (b) फ्रेशर |
| (c) माइल्स बर्किट | (d) कारलाइल |

DSSSB PGT 2019

Ans. (a) : नवपाषाण काल से ही पत्थरों को पालिश करने की शुरुआत होती है। सर्वप्रथम 1842 में कर्नाटक के मैसूर के लिंगसुगूर से नवपाषाणिक उपकरण प्राप्त हुए, लेकिन व्यापक स्तर पर उपकरणों की खोज तथा नियोलिथिक युग के बारे में जानकारी लेमेसुरियर द्वारा प्रदान किया गया। इन्होंने 1860 में उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जिले में टोंस नदी घाटी से नवपाषाण काल के पालिशदार सेल्ट को प्राप्त किया। प्रमुख नवपाषाण कालीन उपकरणों में पालिशदार कुल्हाड़ी, वसुली, छेनी, गैती एवं चौंचदार उपकरण आदि शामिल हैं।

40. मेसोलिथिक युग से सम्बन्धित इनमें से कौन सा बयान गलत है?

- (a) यह मेसोलिथिक तथा नियोलिथिक युग के बीच की संक्रमण अवधि रही है।
- (b) वे गाय, कुत्ते, बैल, बकरी जैसे जानवरों को पालना आरंभ करते थे।
- (c) मेसोलिथिक युग के उपकरणों की गुण विशेषता लघु पाषाण युक्त थे।
- (d) सन् 1867 में कालाइल ने विन्ध्य के चट्टानी आवासों से माइक्रोलिथ्स को पहली बार खोज किया था।

DSSSB PGT 2019

Ans. (a) : मेसोलिथिक युग अर्थात् मध्यपाषाण काल उच्च पुरापाषाण काल एवं नवपाषाण काल (नियोलिथिक युग) के मध्य के संक्रमण काल को माना जाता है। मध्यपाषाण काल को लगभग 9000 ई.पू. के आस पास रखा जाता है। यह कालखण्ड 10,000 ई.पू. के आस-पास हिम युग के अंत के पश्चात् जलवायु में परिवर्तन के प्रारंभ के बाद के कालखण्ड के रूप में देखा जाता है। इस युग में पशुपालन का आरंभ प्रमुख विशेषता मानी जाती है जिसके साक्ष्य आदमगढ़ एवं बागोर से प्राप्त हुए हैं।

41. भारत के नियोलिथिक स्थिरीकरण की तिथि लगभग

- | | |
|---------------|-----------------------------|
| (a) 8000 B.C. | (b) 6000 B.C. |
| (c) 7000 B.C. | (d) उपरोक्त कोई भी नहीं हैं |

DSSSB PGT 2019

Ans. (c) : विश्वस्तरीय संदर्भ में नवपाषाण युग जहाँ 9000 ई.पूर्व से प्रारंभ माना जाता है, वहीं भारतीय उपमहाद्वीप में मेहरगढ़ से प्राप्त नवपाषाणिक बस्ती का कालक्रम 7000 ई.पूर्व रखा गया है, इसी आधार पर भारत में नवपाषाणिक स्थिरीकरण की तिथि 7000 ई.पूर्व माना जाता है।

42. सांभर प्रदेश के लवण-सरोवर में पाये जाने वाले संग्रह के कृषि योग्य बनाने की सूचना लगभग इस अवधि की है

- (a) 7000-6000 B.C. (b) 6900-5900 B.C.
(c) 4000-3000 B.C. (d) 10,000-9000 B.C.

DSSSB PGT 2019

Ans. (a) : राजस्थान के पुराने नमक-झील सांभर के जमावों के अध्ययन से प्रतीत होता है कि लगभग 7000-6000 ई.पूर्व के आसपास पौधे लगाए जाते थे एवं कृषि कार्य प्रारंभ हो चुका था।

43. इनमें से किस नियोलिथिक प्रदेश में हड्डियों से बनाये गये उपकरण और औजार अबाधित रूप में दिखाई पड़ने लगे थे?

- (1) बुर्जहोम (2) चिरांद
(3) अलहाबाद (4) मेहरगढ़

सही उत्तर समूह को चुनिए :

- (a) केवल 2 (b) 3 और 4
(c) 1 और 2 (d) केवल 1

DSSSB PGT 2019

Ans. (c) : कश्मीर की नवपाषाणिक संस्कृति की कई विशेषताएँ हैं जैसे- गर्तावास, मृदभांड की विविधता एवं पत्थरों के साथ-साथ हड्डी के तरह-तरह के औजार। इसी तरह पटना के निकट चिरांद भी गंगा घाटी में एक स्थान है जहाँ से हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए हैं। इस तरह कश्मीर के बुर्जहोम, गुफकराल जैसे स्थानों के साथ-साथ चिरांद से भी हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए हैं।

44. चाल्कोलिथिक अर्थशास्त्र था

- (a) ग्रामीण
(b) खाना बदोश या पशुचारण अवस्था
(c) अनिर्धारित
(d) नगरीय

DSSSB PGT 2019

Ans. (a) : चाल्कोलिथिक अथवा ताप्रपाषाण काल की संस्कृतियों में मानव पत्थर एवं ताँबे के उपकरणों का साथ-साथ प्रयोग करते थे। ताप्रपाषाणिक संस्कृति के लोगों का आर्थिक आधार ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर आधारित था, जो पहाड़ी एवं नदी क्षेत्रों में देश के विशाल क्षेत्रों में फैला था।

45. 'डोलमेन्स' इस शब्द का तात्पर्य क्या है?

- (a) हड्डी और लकड़ी द्वारा उपकरण बनाना
(b) चाक पर निर्मित मिट्ठी के बरतन
(c) इतिहास पूर्व की चित्रकलाएँ
(d) गड़े हुए मुर्दों पर निर्मित समाधियाँ

DSSSB PGT 2019

Ans. (d) : डोलमेन्स शब्द का तात्पर्य गड़े हुए मुर्दों पर निर्मित समाधियाँ हैं। यह कोलिटिक भाषा का शब्द है जिसका शान्तिक अर्थ है पत्थर की मेज। इसकी आकृति आयताकार मेज की तरह होती थी। सामान्यतः इनका निर्माण जमीन की सतह के ऊपर किया जाता था। मृतकों को दफनाने के लिए संदूक के आकार की कब्र बनाने के लिए चार या चार से अधिक शिलाओं को चारों तरफ खड़ा करके ऐसी आकृतियों का निर्माण किया जाता था।

46. निश्चित कथन (A) : नियोलिथिक लोग पहाड़ी प्रदेशों से दूर अपने रहने के ठिकाने बना चुके थे।
कारण (R) : नियोलिथिक लोग पत्थर से बने उपकरण और शस्त्र पर पूरी तरह निर्भर थे।

- (a) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा R, A का सही विवरण है
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A का सही विवरण नहीं है
(c) A सही है लेकिन R गलत है
(d) A गलत है लेकिन R सही है

DSSSB PGT 2019

Ans. (c) : नियोलिथिक काल में मानव खाद्य-उत्पादन एवं कृषि-कर्म से जुड़ चुका था। अतः इस काल तक मानव पहाड़ी प्रदेशों से दूर निवास-स्थल बनाने लगा था। कृषि कार्य एवं उत्पादन प्रक्रिया के विकास के कारण प्रस्तर औजारों की निर्भरता में कुछ कमी आयी थी, यद्यपि पत्थरों का प्रयोग इस काल में भी हो रहा था।

47. आदिम मानव द्वारा सीखा गया पहला विषय है

- (a) चक्र का निर्माण
(b) पशुओं को पालना
(c) व्यवस्थित जीवन निर्वहन करना
(d) आग को तैयार करना

DSSSB PGT 2019

Ans. (b) : पशुपालन का आरंभ मध्यपाषाण काल से ही मानव जाता है। जबकि शेष अन्य विषय नवपाषाण काल से संबंधित हैं।

48. होमोसेपियन्स से जातीय रूप से भिन्न आरंभिक मानव नुमा जीवी को सामान्यतः कहते हैं

- (a) होमिनिड (b) पिथेक्यान्थ्रोपस
(c) सिनान्थ्रोपस (d) एनॉन्थ्रोपस

DSSSB PGT 2019

Ans. (a) : मानव जैसे प्राणी अर्थात् आरंभिक प्राणी जिनसे मानव का विकास हुआ, होमिनिड कहलाते हैं।

49. निम्नलिखित में से कौन सा नवपाषाणिक स्थल राख के टीले के लिए जाना जाता है?

- (a) गुफकराल (b) सेन्यूर
(c) पल्लवाय (d) चिरांद

RPSC 2018

Ans. (c) : दक्षिण भारतीय नवपाषाणिक बसितियों की मुख्य विशेषताओं में एक राख के टीले हैं। दक्षिण भारत के पल्लवाय (आंध्र प्रदेश), उत्तनूर (आंध्र प्रदेश), पिकलीहल, ब्रह्मगिरि, मास्की (सभी कर्नाटक) आदि स्थलों से राख के टीले प्राप्त हुए हैं।

50. नवपाषाणिक स्थलों को चिह्नित कीजिए जहाँ से चावल की खेती के प्रमाण मिले हैं :

- (1) कोलिडहवा (2) उत्तनूर
(3) महागड़ा (4) मेहरगढ़

सही कूट चुनिए :

- (a) 1 और 2 (b) 1 और 4
(c) 2 और 4 (d) 1 और 3

RPSC 2018

Ans. (d) : बेलन घाटी क्षेत्र अवस्थित नवपाषाणिक स्थल कोलिडहवा एवं महागड़ा से चावल की खेती के प्रमाण मिले हैं।

51. मध्य प्रदेश में आदमगढ़ और राजस्थान में बागोर से प्रचीन साक्ष्य मिले हैं :

- (a) चमकदार प्रस्तर उपकरण के
- (b) चॉक से बनी पॉटरी के
- (c) पालतू जानवरों के
- (d) जुते हुए खेत के

RPSC 2018

Ans. (c) : मेसोलिथिक युग अर्थात् मध्यपाषाण काल उच्च पुरापाषाण काल एवं नवपाषाण काल (नियोलिथिक युग) के मध्य के स्क्रमण काल को माना जाता है। मध्यपाषाण काल को लगभग 9000 ई.पू. के आस पास रखा जाता है। यह कालखण्ड 10,000 ई.पू. के आस-पास हिम युग के अंत के पश्चात् जलवायु में परिवर्तन के प्रारंभ के बाद के कालखण्ड के रूप में देखा जाता है। इस युग में पश्चालन का आरंभ प्रमुख विशेषता माना जाता है जिसके साक्ष्य आदमगढ़ एवं बागोर से प्राप्त हुए हैं।

52. अलैक्जेंडर कनिंघम के विषय में कौन सा कथन सही नहीं है?

- (a) वह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के प्रथम महानिदेशक थे।
- (b) उन्हें भारतीय पुरातत्व का जनक कहा जाता है।
- (c) उन्होंने लाई कर्जन के प्राचीन भारतीय धरोहरों के संरक्षण कार्य को आगे बढ़ाया।
- (d) उनके कार्यकाल में हड्डियां की खुदाई हुई थी।

MP Asst. Prof. 2017

Ans. (c) : अलैक्जेंडर कनिंघम भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के प्रथम महानिदेशक थे। उन्हें भारतीय पुरातत्व का जनक कहा जाता है। इन्हीं के कार्यकाल में हड्डियां की खुदाई हुई थी। उन्होंने लाई कर्जन के प्राचीन भारतीय धरोहरों के संरक्षण कार्य को आगे बढ़ाया, यह कथन सही नहीं है।

53. “पुरातात्त्विक सामग्री इतिहास की सर्वश्रेष्ठ कसौटी है” यह कथन किसका है?

- | | |
|----------------------|-----------------------|
| (a) जॉन मार्शल | (b) विन्सेट स्मिथ |
| (c) डी. आर. भण्डारकर | (d) राहुल सांकृत्यायन |

MP Asst. Prof. 2017

Ans. (d) : ‘पुरातात्त्विक सामग्री इतिहास की सर्वश्रेष्ठ कसौटी है’ यह कथन राहुल सांकृत्यायन का है। राहुल सांकृत्यायन जिन्हें महार्पंडित की उपाधि दी जाती है हिन्दी के एक प्रमुख साहित्यकार थे तथा वे एक प्रतिष्ठित बहुभाषाविद थे।

54. सूक्ष्माशम मुख्यतः सम्बन्धित है:

- (a) पुरापाषाण युग
- (b) मध्यपाषाण युग
- (c) नवपाषाण युग
- (d) ताप्रपाषाण युग

MP Asst. Prof. 2017

Ans. (b) : सूक्ष्माशम मुख्यतः मध्यपाषाण युग से संबन्धित हैं। भारत में मध्यपाषाण काल के विषय में जनकारी सर्वप्रथम 1867 ई. में हुई जब सी. एल. कार्लाइल ने विष्य क्षेत्र से लघुपाषाणोपकरण खोज निकाले। इस काल के उपकरण ब्लेड, ब्यूरिन, स्क्रेपर व बेधक थे।

55. निम्नलिखित में से किस स्थान पर वर्तमान काल से 80000 से 100000 वर्ष पुराने आधुनिक मनुष्य के अवशेष मिले हैं?

- (a) ऑस्ट्रेलिया की मुंगो झील
- (b) बोर्नेओ की नियाह गुफा
- (c) इंजराइल में गफजेह का कपाल
- (d) मोरक्को में डर एस सोल्टन

DSSSB PGT 2016

Ans. (b) : वर्तमान काल से 80000 से 100000 वर्ष पुराने आधुनिक मनुष्य के अवशेष बोर्नेओ की गुफा से प्राप्त हुआ था।

56. निम्नलिखित में से कौन-सी संभवतः भारत में प्रयोग की जाने वाली प्रथम धातु थी?

- | | |
|----------|-----------|
| (a) लोहा | (b) ताँबा |
| (c) सोना | (d) चाँदी |

TGT - 2016

Ans : (b) सर्वप्रथम जिस धातु को औजारों हेतु प्रयोग किया गया वह ‘ताँबा’ थी। ऐसा माना जाता है कि ताँबे का सर्वप्रथम प्रयोग लगभग 5000 ई. पू. में किया गया था। ताँबा राजस्थान की खेतड़ी से प्राप्त होता था। ताँबा के प्रयोग से पहले पत्थर के औजारों का प्रयोग किया जाता था। ताँबा की खोज हो जाने से इस काल को ताप्रपाषाण काल कहा गया।

57. भारतीय स्थल पर गड्ढे खोदने के साक्ष्य निम्नलिखित में से किस प्राचीन स्थल से पाए गए हैं?

- (a) लोथल और कालीबंगा
- (b) बुर्जोम और रंगपुर
- (c) रूपर और रंगपुर
- (d) कालीबंगन और सुरकोटदा

TGT - 2016

Ans : (b) नव पाषाण कालीन युग के प्रथम प्रसार उपकरण उ.प्र. के टोंस नदी घाटी में सर्वप्रथम 1860 ई. में ले मेसुरियर ने प्राप्त किया। नवपाषाण कालीन स्थल बुर्जोम एवं गुफकराल (जो कश्मीर प्रान्त में स्थित है) से अनेक गर्तवास (गड्ढाघर), मृदभाण्ड तथा हड्डी के कई औजार प्राप्त हुए हैं। बुर्जोम से प्राप्त कब्रों में पालतू कुत्तों को मालिक के साथ दफनाया जाता था।

58. निम्नलिखित में से कौन-सा प्राचीन भारत के एक उपकरण परंपरा से नहीं जुड़ा है?

- | | |
|---------------|--------------|
| (a) मोस्टरियन | (b) अचुलियन |
| (c) ओल्डोवान | (d) ग्रोशियन |

TGT - 2016

Ans : (d) ग्रोशियन प्राचीन भारत के एक उपकरण परम्परा से नहीं जुड़ा है। मोस्टरियन को एक उपकरण के अन्तर्गत रखा गया है। अचुलियन और ओल्डोवान को भी एक उपकरण के रूप में प्रदर्शित किया गया है। ये सभी उपकरण सबसे प्राचीन उपकरणों की श्रेणी में रखे गये हैं।

59. किस क्षेत्र को भारतीय प्रागैतिहास का टेक्स्ट बुक कहा जाता है?

- | | |
|----------------|-------------------|
| (a) बेलन घाटी | (b) मध्य सोन घाटी |
| (c) कैमूर घाटी | (d) होंसगी |

U.P. Higher Edu. Exam. (Ancient History) 2018

Ans : (a) बेलन नदी घाटी (टोंस नदी की सहायक) उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले से निकलकर मिर्जापुर जिले से होते हुए इलाहाबाद जिले में टोंस नदी से मिल जाती है। यह घाटी क्षेत्र पुरातात्त्विक खोज के लिए प्रसिद्ध है इस घाटी क्षेत्र को भारतीय प्रागैतिहास का टेक्स्ट बुक भी कहा जाता है।

60. निम्न में से कौन सा उपकरण हस्तपरशु का प्रकार नहीं है?

- | | |
|-----------|----------|
| (a) फ्लेक | (b) चॉपर |
| (c) पेबुल | (d) बोरर |

U.P. Higher Edu. Exam. (Ancient History) 2018

Ans : (*) हस्तपरशु (कुठार) प्रकार के पाषाण उपकरणों के निर्माण में फ्लेक विधि, चॉपर चॉपिंग विधि तथा बोरर विधि का प्रयोग किया था, जबकि हैण्डएक्स के औजार सर्वप्रथम मद्रास तथा अतिरपक्कम से प्राप्त है। इनमें क्लीवर, स्केपर आदि उपकरण भी शामिल हैं। पेबुल उपकरण इस श्रेणी के नहीं हैं। आयोग ने अपने संशोधित उत्तरकुंजी में इस प्रश्न को हटा दिया था।

61. बसुलि, छेनी, छेद वाला गोल पत्थर किस संस्कृति के हैं?

- (a) नवपाषाण युग (b) ताप्रयुग
 (c) लौहयुग (d) चित्रित धूसर भाण्ड संस्कृति

U.P. Higher Edu. Exam. (Ancient History) 2018

Ans : (a) नवपाषाण कालीन स्थलों में बुर्जहोम एवं गुफकराल (कश्मीर प्रांत) से अनेक प्रकार के मृदभाण्ड एवं प्रस्तर तथा हड्डी के औजार प्राप्त हुए हैं यहाँ के प्रमुख औजार बसुलि, छेनी आदि द्वारा कृषि कार्यों को सम्पन्न किया जाता था।

62. बुर्जहोम किस प्रार्थितिहासिक संस्कृति का केन्द्र है ?

- (a) पूर्व पाषाण युग (b) उत्तर पाषाण युग
 (c) मध्यपाषाण युग (d) नवपाषाण युग

U.P. Higher Edu. Exam. (Ancient History) 2018

Ans : (d) बुर्जहोम (जम्मू-कश्मीर) नवपाषाणिक युग का प्रमुख केन्द्र माना जाता है यहाँ से कृषि, पशुपालन और गर्त आवास का साक्ष्य मिला है।

63. किस धातु में प्रथमतः टिन का मिश्रण किया गया?

- (a) लोहा (b) ताँबा
 (c) कांसा (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

GDC ASST. PROF. 2017

Ans. (b) : मानव सभ्यता के इतिहास में ताँबे का एक प्रमुख स्थान है क्योंकि प्राचीन काल में मानव द्वारा सबसे पहले प्रयुक्त धातुओं व मिश्र धातुओं में ताँबा व कांसे (ताँबा + टिन) का नाम आता है।

64. किस धातु को वी. गॉर्डन चाइल्ड ने जनतांत्रिक धातु कहा?

- (a) ताँबा (b) लोहा
 (c) टिन (d) कांसा

GDC ASST. PROF. 2017

Ans. (b) : वी. गॉर्डन चाइल्ड एक ऑस्ट्रेलियाई पुरातत्त्वविद् थे। उन्होंने लोहा को जनतांत्रिक धातु कहा। वह मानव समाज में क्रांतिकारी तकनीकि व आर्थिक विकास की भूमिका पर जोर देने के लिये प्रसिद्ध थे। नवपाषाण क्रांति व शहरी क्रांति से संबंधित उनके विचार सामाजिक विकास से संबंधित मार्क्सवादी विचारों के प्रभाव को दर्शाते हैं। चाइल्ड ने पाषाण युग को पुरापाषाण व नवपाषाण में उपविभाजित करने के लिये तकनीकि मानदण्ड का उपयोग किया। उन्होंने ही सर्वप्रथम 'नवपाषाणकालीन ताप्रपाषाण युग' को आत्मनिर्भर खाद्य अर्थव्यवस्था के रूप में परिभाषित किया था।

65. नवपाषाण काल की मुख्य विशेषताएँ हैं:

- (a) पशुपालन
 (b) कृषि
 (c) उपर्युक्त (a) एवं (b) दोनों
 (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

GDC ASST. PROF. 2017

Ans. (c) : नवपाषाण काल की मुख्य विशेषताओं में 2 तत्व शामिल किये जाते हैं- पशुपालन व कृषि। पशुपालन के प्रारंभिक साक्ष्य मध्यपाषाणकाल के अन्तिम चरण में प्राप्त होने लगते हैं जिनमें आदमगढ़ (होशंगाबाद, म.प्र.) तथा बागोर (भीलवाडा, राजस्थान) प्रमुख स्थल हैं। नवपाषाण काल में कृषि व पशुपालन परम्परागत रूप से प्रारम्भ हुआ इस काल में पॉलिशदार पाषाण उपकरणों का निर्माण मुख्य है। खाद्यान्त्रों का उत्पादन सर्वप्रथम नवपाषाण काल में हुआ इसी काल में जौ एवं गेहूँ की वन्य किस्म को खेती के योग्य बनाया गया तथा जिससे कृषि जन्य गेहूँ का उद्भव हुआ। नवीनतम खोजों में धान उत्पादन का प्राचीनतम साक्ष्य लहुरादेव, (संतकबीर नगर, (उ.प्र.)) में 9000 ई.पू. से 8000 ई.पू. के मध्य प्राप्त हुआ।

66. इनमें से किस युग को संक्रमण काल कहते हैं?

- (a) नवपाषाण काल (b) मध्यपाषाण काल
 (c) पुरापाषाण काल (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

GDC ASST. PROF. 2017

Ans. (b) : मध्यपाषाण काल को संक्रमण काल माना जाता है। इस युग तक हिमयुग पूरी तरह से समाप्त हो चुका था तथा जलवायु गर्म व आर्द्र हो चुकी थी। मध्यपाषाण काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी मनुष्य को पशुपालक बनाना। साथ ही इस काल में तीक्ष्ण व परिष्कृत औजारों का प्रयोग होने लगा। मध्यपाषाण काल में ही मानव अस्थिपंजर व वृक्षारोपण के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

67. लेखकों की सूची-I का सूची-II में दी गई उनकी प्रकाशित पुस्तकों से मिलान करें।

| सूची-I | सूची-II |
|--------------------|--------------------------------------|
| A. डी.डी. कोसाम्बी | 1. इंडियन फ्यूडलिस्म |
| B. आर.एस. शर्मा | 2. मिथ एंड रियलिटी |
| C. जी.सी. पांडे | 3. सोमनाथः द मेनी वॉइसेस ऑफ हिस्ट्री |
| D. रोमिला थापर | 4. फाउंडेशन ऑफ इंडियन कल्चर |

| A | B | C | D | A | B | C | D |
|-------|---|---|---|-------|---|---|---|
| (a) 1 | 2 | 3 | 4 | (b) 2 | 3 | 4 | 1 |
| (c) 3 | 2 | 4 | 1 | (d) 2 | 1 | 4 | 3 |
| (e) 4 | 2 | 1 | 3 | | | | |

Chhattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (d) : सही सुमेलन है-

| | |
|-----------------|-----------------------------------|
| डी.डी. कोसाम्बी | मिथ एंड रियलिटी |
| आर.एस. शर्मा | इंडियन फ्यूडलिस्म |
| जी.सी. पांडे | फाउंडेशन ऑफ इंडियन कल्चर |
| रोमिला थापर | सोमनाथः द मेनी वॉइसेस ऑफ हिस्ट्री |

68. भारत में निम्नलिखित ताप्रपाषाणिक संस्कृतियों का सही कालानुक्रम क्या है?

- | | |
|----------------|----------------|
| 1. कायथा | 2. अहाड़ |
| 3. मालवा | 4. जोरवे |
| (a) 1, 2, 3, 4 | (b) 4, 2, 3, 1 |
| (c) 2, 1, 3, 4 | (d) 1, 4, 3, 2 |
| (e) 3, 4, 2, 1 | |

Chhattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (a) : भारतीय ताप्रापाषणिक संस्कृतियां ग्राम्य - संस्कृतियां हैं। ताप्रापाषणिक पुरास्थलों के उत्पन्न से उपलब्ध पुरावशेषों के आधार पर भारत की प्रमुख ताप्रापाषण संस्कृतियों का कालानुक्रम है - कायथा, अहाड़, मालवा, जोर्वे। कायथा (उज्जैन, मध्य प्रदेश), अहाड़ (उदयपुर, राजस्थान), मालवा (मध्य प्रदेश), जोर्वे (महाराष्ट्र के अहमदनगर) पुरास्थल की जानकारी प्राप्त होती है।

RPSC Lecturer 2016

Ans. (c) : अहाड़, गिलुंद, मर्मी एवं बालाथल राजस्थान में स्थित प्रमुख ताप्रपाषाणिक स्थल हैं। ये स्थल बनास नदी के क्षेत्र में हैं, इसलिए यहां की ताप्रपाषाणिक संस्कृति को बनास संस्कृति भी कहते हैं। बालाथल की खोज बी.एन. मिश्रा ने की। बालाथल से लाल लेप मृदभाण्ड, बेर तथा U आकार में चूल्हों का प्रमाण मिलता है।

70. बागोर साइट के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से कौन-सा सही नहीं है?

 - (a) यह राजस्थान में अवस्थित है।
 - (b) इसके विशुद्ध मध्यपाषाण प्राक-भाण्ड चरण के होने के सम्बन्ध में हमारे पास 5365-3775 ई. पू. की अवधि की कार्बन तिथियाँ हैं।
 - (c) इसके प्रारंभ से ही कृषि सम्बन्धी चिन्ह पाये गए हैं।
 - (d) जबु, बैल, भेड़, बकरी और सुअर का करीब 5000 ई. पू. से ही पालतू पशु के रूप में पालन किया जाता था।

UGC/NTA June 2019 IIInd Paper

Ans. (c) : बागोर राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में स्थित है। यहाँ 1968 से 1970 तक वी.एन. मिश्र ने उत्खनन कार्य करवाया था। बागोर भारत का सबसे बड़ा मध्य पाषाणिक स्थल है। यहाँ से मध्यपाषाण, ताप्रपाषाण युग एवं लौह युग का साक्ष्य प्राप्त होता है। मध्यप्रदेश में स्थित आदमगढ़ तथा बागोर दो मध्यपाषाणिक स्थल ऐसे हैं जो पश्चालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। बागोर से चैल्सेडनी औजारो की प्राप्ति अत्यधिक मात्रा में हुई है। बागोर में जबु, बैल, भेड़, बकरी और सुअर की करीब 5000 ई. पू. से ही पालतू पशु के रूप में पालन किया जाता था। इसके विशुद्ध मध्यपाषाण प्राक् - भाण्ड चरण के होने के सम्बन्ध में हमारे पास 5365-3775 ई. पू. की अवधि की कार्बन तिथियाँ हैं। यहाँ प्रारम्भ से ही कृषि सम्बन्धी चिन्ह नहीं मिलते हैं।

71. भरतपुर पुरातात्त्विक स्थल के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा वक्तव्य सही नहीं है?

 - (a) यह पश्चिम बंगाल में स्थित है।
 - (b) यह राजस्थान में स्थित है जहाँ से प्रवासी पक्षियों की हड्डियों के अवशेष मिले थे।
 - (c) कालावधि I में मछली पकड़ने, शिकार करने और कृषि के साक्ष्य मिले हैं।
 - (d) कालावधि II में लोहे और उत्तरी काले चमकदार मुदभांड के प्रयोग के साक्ष्य मिले हैं।

UGC/NTA June 2019 IInd Paper

Ans. (b) : भरतपुर पुरातात्त्विक स्थल पश्चिम बंगल में स्थित है। यहाँ के कालखण्ड-I से ताबों की वस्तुएं प्राप्त हुई हैं। जो काले और लाल मृदभाण्डों की संस्कृति से जुड़ी हुई है। साथ में सूक्ष्मपाषाण औजार, नवपाषाण कुल्हाड़ी, पकी मिट्टी के मनके भी मिले हैं। यहाँ एक गड्ढे में चावल के जले हुए अवशेष मिले हैं। ताप्राषाण काल खण्ड-II में कुछ मात्रा में ताबों की वस्तुएं मिली हैं। इसी काल से लोहे के भालात्र और लोहे के स्लैवंग भी मिले हैं। यहाँ कई अन्य प्रकार के मृदभाण्ड भी पाए गए हैं जिसमें चिकनी मिट्टी के घोल के लेप वाले काले मृदभाण्ड और एक धूसर/पांडु लेप वाला मृदभाण्ड शामिल है। पालतू मवेशी, धैस, बकरी तथा हिरण साथ में सांभर, मछली, कछुए और पक्षी जैसे पश्शओं की हड्डियों के अवशेष मिले हैं।

72. निम्नांकित में से कौन भारत में ज्ञात विशालतम् मध्यपाषाण वास क्षेत्र है?

(a) बागोर (b) चोपनीमांडो
(c) कोल्डहवा (d) महगडा

UGC/NTA Dec 2019 IInd Paper

Ans. (a) : मध्यपाषाण काल के उपकरण अत्यन्त छोटे होते थे इसलिए इन्हें ‘माइक्रोलिथ’ कहा गया। यह पुरापाषाण काल और नवपाषाण काल के बीच एक संकरमणकालीन दौर के रूप में प्रकट होता है। मध्यपाषाणकालीन केन्द्र बड़ी संख्या में राजस्थान, दक्षिणी उत्तर प्रदेश, मध्य और पूर्वी भारत तथा कृष्णा नदी के दक्षिण में पाए जाते हैं। मध्य प्रदेश में आदमगढ़ और राजस्थान में बागोर केन्द्र से प्राप्त साक्ष्य पशुपालन को दर्शाते हैं बागोर से मध्यपाषाण काल के पांच मानव कंकाल मिले हैं, जो व्यवस्थित ढंग से दफनाए गये थे। इस स्थल से पाषाण युग की सर्वाधिक सामग्री प्राप्त हुई है। इनमें स्क्रेपर, पोइंट, बेधक, खुरचनी आदि प्रपुख हैं यहाँ के उद्योग में बहुत ही छोटी-छोटी वस्तुओं का निर्माण होता था और वे ज्यामितीय प्रारूपों की दृष्टि से अत्यन्त उत्तम थी। इस क्षेत्र को मध्यपाषाण वास क्षेत्र का सबसे बड़ा स्थल माना गया।

UGC/NTA Dec 2019 Hindi Paper

Ans. (d) : भारत के नर्मदा घाटी के जीवाशमों में हाथी, घोड़े, दरियाई घोड़ा, जंगली भैंसों के जीवाशम के साथ सीहोरे के हथनोरा में 5 दिसंबर 1982 को मानव कपाल के अवशेष खोजे गए। यहाँ के मानव जीवाशम औजारों के साथ पाए गए। सुरक्षकुंड में नर्मदा के उत्तरी तट पर प्राचीनतम विलुप्त हाथी (स्टेगोडॉन) के दोनों दाँत तथा कुपरी जबड़े के जीवाशम भी प्राप्त हए।

में केरल विश्वविद्यालय के पी. राजेन्द्र को

विल्लापुरम् जिला के ओडई में एक शिशु का पूरा कपाल मिला है। जिसकी तिथि 166,000 वर्ष निर्धारित की गई जो मध्य से उच्च प्लीस्टोसीन काल का है।

75. भारतीय उपमहाद्वीप के निम्नलिखित में से किस नवपाषाणकालीन स्थल पर फसल उत्पादन का प्राचीनतम साक्ष्य पाया गया है?
- किलों गुल मोहम्मद
 - कोटदीजी
 - मेही
 - मेहरगढ़

UGC/NTA Dec 2019 IIInd Paper

Ans. (d) : वर्तमान पाकिस्तान और इरान के सीमांत प्रदेश के मध्य स्थित मेहरगढ़ को पूर्व मृदभाण्ड नवपाषाण काल से हड्पाणकाल तक का प्रमुख स्थान माना गया है। यहाँ से गेहूँ की तीन एवं जौ की दो किस्मों की खेती किए जाने के प्रमाण मिले हैं इसे “बलूचिस्तान की रोटी की टोकरी” कहा जाता है। अतः इसे ही नवपाषाणकालीन स्थल पर फसल उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र के रूप में जाना जाता है।

76. निम्नलिखित में से किस पुरापाषाणकालीन स्थल पर एश्यूलियन औजारों के साथ पशु पद-चिह्न के एक समुच्चय का साक्ष्य मिला है?
- अतिरपक्कम
 - भीमबेटका
 - हुंसगी
 - पलेझ

UGC/NTA Dec 2019 IIInd Paper

Ans. (a) : पुरापाषाणकालीन संस्कृति के अवशेष सोहेन नदी घाटी, बेलन नदी घाटी तथा नर्मदा नदी घाटी एवं भोपाल के पास ‘भीमबेटका’ नामक चित्रित शैलाश्रयों से प्राप्त हुए हैं। पुरापाषाण काल से संबंधित उपकरणों को दो भागों में विभाजित किया गया है- चॉपर चॉपिंग पेन्डल संस्कृति, हैण्डएक्स संस्कृति। हैण्डएक्स संस्कृति के उपकरण सर्वप्रथम मद्रास के समीप बदमदुरै एवं अतिरपक्कम से प्राप्त किए गए। यह साधारण पत्थरों के कार तथा फ्लेक प्रणाली द्वारा निर्मित किए गए। इस संस्कृति के उपकरण क्लीवर एवं स्क्रेपर हैं। अतिरपक्कम से ही एश्यूलियन औजारों के साथ पशु पाद चिह्न के एक समुच्चय का साक्ष्य मिला हुआ है।

77. बूचड़खाना क्षेत्र का साक्ष्य प्राप्त हुआ है-
- महदहा से
 - चोपनी माण्डो से
 - दमदमा से
 - सराय नाहर राय से

UPPCS LT 2018

Ans : (a) महदहा (पट्टी, प्रतागढ़) मध्यपाषाणकालीन स्थल है, यहाँ से पशुवध स्थल (बूचड़खाना) का साक्ष्य मिला है।

78. इनमें से किन्हें भारत के प्राग् - इतिहास के अध्ययन को आरम्भ करने का श्रेय दिया जाता है?
- कॉमियाडे
 - रॉबर्ट ब्रूसफुट
 - एच.डी. संकालिया
 - डी टेरा

UPPCS LT 2018

Ans : (b) रॉबर्ट ब्रूसफुट ब्रिटिश भू-गर्भ वैज्ञानिक और पुरातत्त्विक थे। जियोलॉजिकल सर्वे से संबद्ध ब्रूसफुट ने सर्वप्रथम 1863 ई. में भारत में पाषाणकालीन बस्तियों के अन्वेषण की शुरुआत की।

79. हड्डी की मातृदेवी मूर्ति प्राप्त हुई है?
- विन्ध्य घाटी के निम्न पूर्वपाषाण काल से
 - सोन घाटी के मध्य पूर्वपाषाण काल से
 - बागोर के मध्य पाषाण काल से
 - विन्ध्य घाटी के उच्च पूर्वपाषाण काल से

UPPCS LT 2018

RPSC Asst. Prof. 2020 (I)

Ans : (d) विन्ध्य घाटी में स्थित बेलन के लोहंदा नाला क्षेत्र में उच्च पूर्व पाषाणकालीन उपकरणों के अतिरिक्त अस्थि निर्मित मातृदेवी की एक प्रतिमा मिली है जो संप्रति कौशाम्बी संग्रहालय में सुरक्षित है। बेलन घाटी की उच्च पूर्व पाषाणकालीन संस्कृति का समय इसा पूर्व 30 हजार से 10 हजार के बीच निर्धारित किया गया है।

80. निम्नलिखित में से किस मध्यपाषाणिक स्थलों से अच्छी खासी लम्बाई वाले अस्थिपंजरों से युक्त शवाधान निकले हैं?

- आदमगढ़
- भीमबैठका
- महदहा
- सरायनाहर राय

नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर को चुनिए :

कूट :

- (i) एवं (ii)
- (i) एवं (iii)
- (ii) एवं (iii)
- (iii) एवं (iv)

UGC/NTA Dec 2018 IIInd Paper

Ans : (d) मध्यपाषाणिक स्थलों में अस्थिपंजरों से युक्त शवाधान प्राप्त हुए हैं जिनमें प्रमुख रूप से प्रतापगढ़ जनपद मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूर स्थित महदहा, सरायनाहर राय महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ से युग्म शवाधान के अतिरिक्त 15 मानव कंकाल, 08 गर्तचूले प्राप्त हुए हैं यहाँ की कब्रें (समाधियाँ) आवास क्षेत्र के अन्दर स्थित थीं।

81. बागोर प्रथम काल का सम्बन्ध निम्नलिखित किस संस्कृति से हैं?

- उच्च पुरापाषाण
- मध्य पाषाण
- ताप्र पाषाण
- लौह काल

PGT 2016

Ans. (b) : म. प्र. के आदमगढ़ एवं राजस्थान के बागोर नामक मध्यपाषाणिक पुरास्थान से पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं। जिनका समय लगभग 5000 ई. पू. हो सकता है। मध्यपाषाण काल में प्रयुक्त होने वाले उपकरण बहुत छोटे होते थे। इसलिए उन्हें माइक्रोलिथिक कहा गया। इस काल में मानव के अस्थिपंजर का सबसे पहला अवशेष प्रतापगढ़ (उ. प्र.) के सरायनाहर राय तथा महदहा नामक स्थल से प्राप्त हुआ है।

82. भारतीय उपमहाद्वीप में निम्नलिखित किस स्थल से सर्वप्रथम होमिनिड जीवाशम की खोज की गई?

- दमदमा
- राखीगढ़ी
- सराय नाहर राय
- हथनोरा

PGT 2016

Ans. (d) : नर्मदा घाटी के हथनोरा (म. प्र.) से एक मानव खोपड़ी प्राप्त हुई है। इसे भारत में प्राप्त किया गया प्रथम मानव अवशेष माना जाता है। इसकी खोज का श्रेय डा. अरुण सोनकिया को है। हथनोरा निम्न पुरापाषाण काल का स्थल है। निम्नपुरापाषाण काल अन्य स्थल निम्न हैं- पल्लवरम्, अतिरपक्कम आदि।

83. ताप्रपाषाण काल में वृत्ताकार गर्तगृहों की प्राप्ति निम्नलिखित किस स्थल से हुई है?

- नवदाटोली
- अहाड़
- हड़प्पा
- इनामगांव

PGT 2016

Ans. (d) : इनामगांव, महाराष्ट्र के पुणे जिले में भीमा नदी की सहायक घोड़ नदी के तट पर स्थित ताप्रपाषाणिक स्थल है। इनामगांव का वृहद पैमाने पर उत्खनन एच.डी. सांकलिया, एम.के. धवलीकर एवं जेड.डी. अंसारी के नेतृत्व में (1968-1983) किया गया। यहाँ से आयताकार एवं वृत्ताकार गर्तगृहों का साक्ष्य प्राप्त हुआ है जिनका निर्माण एक निश्चित योजना के तहत किया गया था। यहाँ से कुम्हर, लोहार, मनका निर्माण, चुना बनाने वाले, हाथी दाँत शिल्पी आदि के आवासीय साक्ष्य मिले हैं।

84. भारत में निम्नलिखित में किस नवपाषाणिक स्थल को सर्वप्रथम सूचित किया गया?
- कोलिड्हां
 - चिरांद
 - गुफकराल
 - लिंगसुगुर

PGT 2016

Ans. (d) : भारतीय प्रागैतिहास को सर्वप्रथम उद्घाटित करने का श्रेय डा. प्राइमरोज को जाता है, जिन्हें 1842 ई. में कर्नाटक के रायचूर जिले के लिंगसुगुर नामक नवपाषाणिक स्थल से प्रागैतिहासिक औजार प्राप्त हुए।

85. शैल चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध प्रागैतिहासिक स्थल निम्नलिखित में कौन है?
- लांधनाज
 - बिरभानपुर
 - नागर्जुनकोणडा
 - भीमबेटका

PGT 2016

Ans. (d) : प्रागैतिहासिक स्थल भीमबेटका खोपाल के समीप स्थित है। इस पुरापाषण कालीन स्थल से अनेक चित्रित गुफाएँ शैलाश्रय (चट्टानों से बने शरण स्थल) तथा अनेक प्रागैतिहासिक कलाकृतियाँ प्राप्त हुई हैं। भीमबेटका नर्मदा नदी घाटी में स्थित है। चित्रकला के सबसे प्राचीन साक्ष्य भीमबेटका से ही प्राप्त हुए हैं। यह पुरा पाषण काल से सम्बन्धित है।

86. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रागैतिहासिक स्थल बड़े परिमाण में लघुपाषण-उपकरणों के उत्पादन के लिए जाना जाता है?
- आदमगढ़
 - बागोर
 - नलगोड़ा
 - संगनकल्लु

UGC NET-II Paper July, 2018

Ans. (a) : बागोर और आदमगढ़ दोनों ही मध्यपाषण काल से सम्बन्धित है मध्यपाषण काल का सम्बन्ध लघु पाषण काल के उपकरणों से था यहाँ दोनों जगह पशुपालन के प्राचीन साक्ष्य भी मिलते हैं। आदमगढ़ की गुफाएँ, जो कि मध्य प्रदेश में हैं यहाँ 2500 के करीब छोटे-छोटे लघु पाषण कालीन उपकरण मिलते हैं। आदमगढ़ मध्य प्रदेश राज्य के होशंगाबाद नगर से 2 किमी. दूर नर्मदा नदी के पास स्थित है। आदमगढ़ की गुफाओं में की गई चित्रकारी में लघु पाषण युगीन सभ्यता के अवशेष आसानी से देखे जा सकते हैं।

87. निम्नलिखित में से कौन-सी वस्तुएँ ताप्र-निधिस्थल से ज्ञात होती हैं?
- मानवरूपी आकृतियाँ
 - एंटेने छुरिका
 - मत्स्यभाला
 - चपटे पुराकुठार

कूट:

- (a), (b) और (c)
- (b), (c) और (d)
- (c), (a), (c) और (d)
- (d), (a), (b), (c) और (d)

UGC NET-II Paper July, 2018

Ans. (d) : ये चारों वस्तुएँ ताप्र-निधिस्थल से ज्ञात होती हैं-

- मानवरूपी आकृतियाँ
- एंटेने छुरिका
- मत्स्यभाला
- चपटे पुराकुठार

88. किस प्रागैतिहासिक स्थल से भारत की प्राचीनतम झोपड़ियों के प्रमाण मिले हैं?
- चिरकी-नेवासा
 - डीडवाना
 - हुंसगी
 - पैसरा

उत्तर-(d) **UGC NET-III Paper Nov. 2017**

व्याख्या- पैसरा (बिहार) से प्राचीनतम झोपड़ियों के साक्ष्य मिले हैं। पैसरा पाषण युग का पुरास्थल है। इसकी खोज विद्वाला जायसवाल ने 1947 में की थी। मध्यपाषण काल के स्थल बागोर (राजस्थान) से भी झोपड़ियों और खड़ंजों द्वारा फर्शों के साक्ष्य मिले हैं। उ.प्र. के सरायनाहर से अनेक छोटी भट्टियाँ, एक बड़ी सामुदायिक भट्टी, झोपड़ी का फर्श और कई कब्रें मिली हैं। यहाँ से स्तम्भगत के भी प्रमाण मिले हैं।

89. मध्य पाषण युग के बारे में निम्नलिखित में से क्या सही है?

- नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर का चयन करें :
- सामान्यतः लघु पाषणिक औजार पाए गये हैं।
 - बागोर, लंघनाज तथा भीमबेटका कुछ महत्वपूर्ण स्थल हैं।
 - जंगली तथा पालतू पशुओं की हड्डियाँ पाई गई हैं।
 - इस काल के शैल चित्र उपलब्ध हैं।

कूट :

- i, ii, iii तथा iv
- i, ii तथा iii
- ii, iii तथा iv
- i, ii तथा iv

उत्तर-(a) UGC NET-II Paper Jan. 2017

व्याख्या- भारत में मध्यपाषण काल के विषय में जानकारी सर्वप्रथम 1867 ई. में हुई जबकि सी.एल. कार्लाइल ने विन्ध्यक्षेत्र से लघु पाषणोपकरण (Microliths) खोज निकाले। इसके पश्चात् देश के विभिन्न भागों से इस प्रकार के लघु पाषणोपकरण खोज निकाले गये। राजस्थान का सबसे प्रमुख स्थल भीलवाड़ा जिले में स्थित बागोर है। यहाँ 1968 से 1970 तक बी.एन. मिश्र ने उत्खनन कार्य करवाया था। यहाँ से मध्य पाषण कालीन उपकरणों के अतिरिक्त लौह काल के उपकरण भी प्रकाश में आये। गुजरात प्रान्त में स्थित लंघनाज सबसे महत्वपूर्ण पुरास्थल है। जहाँ एच.डी. संकालिया, बी. सुब्बाराव, ए.आर. केनेडी आदि पुराविदों द्वारा व्यापक उत्खनन करवाया गया था। इसी प्रकार भीमबेटका के शिलाश्रयों तथा गुफाओं से मध्य पाषण के उपकरण प्राप्त होते हैं। यहाँ से मानव अन्त्येष्ठि के भी प्रमाण मिलते हैं। इस गुफा की खोज 1958 ई. में वी.एस. वाकणकर ने की थी।

90. निम्नलिखित युगों में से कौन-सा युग सही नहीं है?

- निम्न पुरापाषण काल
- उच्च पुरापाषण काल
- मध्यपाषण काल
- नवपाषण काल

उत्तर-(c) (UGC Net.- II Paper June 2012)

व्याख्या- मध्यपाषण काल में मानव द्वारा शिकार व खाद्य संग्रहण के साथ ही पशुपालन की शुरुआत हो चुकी थी, जबकि नव पाषण काल में खाद्य उत्पादन किया जाने लगा था। साथ ही स्थायी मानव जीवन प्रारम्भ हुआ।

91. निम्नलिखित में से विन्ध्य क्षेत्र में स्थित नवपाषण युगीन स्थल कौन-सा है?

- महगड़ा
- चिरांद
- बानगढ़
- खुत्ती

उत्तर-(a) (UGC Net.- III Paper Dec. 2012)

व्याख्या- महगड़ा नवपाषण युगीन स्थल विन्ध्य क्षेत्र में स्थित है। जो यमुना नदी के किनारे इलाहाबाद शहर के दक्षिण में लगभग 70 किमी. दूर स्थित है। विद्वित है कि इसकी खोज 1949 एवं 1951-56 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. जी.आर. शर्मा ने किया था।

92. सूची-I को सूची-II सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

सूची-I

- (a) पुरापाषण
- (b) मध्यपाषण
- (c) नवपाषण
- (d) उच्च पुरापाषण

कूट :

- | | | | |
|------------|------------|------------|------------|
| (A) | (B) | (C) | (D) |
| (A) (I) | (IV) | (II) | (III) |
| (B) (III) | (I) | (IV) | (II) |
| (C) (III) | (IV) | (I) | (II) |
| (D) (II) | (III) | (IV) | (I) |

उत्तर-(c)

सूची-II

- (i) घिसे पाषण उपकरण
- (ii) शैल चित्र
- (iii) चिप्पड पाषण उपकरण
- (iv) लघु पाषण उपकरण

(UGC Net.- III Paper June. 2013)

व्याख्या—सुमेल निम्नवत् है—

सूची-I

- पुरापाषण
- मध्यपाषण
- नवपाषण
- उच्च पुरापाषण

सूची-II

- चिप्पड पाषण उपकरण
- लघु पाषण उपकरण
- घिसे पाषण उपकरण
- शैल चित्र

93. निम्नलिखित नगरों में से कौन-सा महापाषणयुगीन संस्कृति से सम्बन्धित नहीं है?

- (a) चन्द्रगिरि
- (b) ब्रह्मगिरि
- (c) अदिछ्णल्लूर
- (d) उत्तरनूर

उत्तर-(d) **(UGC Net.- III Paper June. 2013)**

व्याख्या—नवपाषण युग की समाप्ति के पश्चात् दक्षिण में जिस संस्कृति का उदय हुआ उसे वृहद अथवा महापाषण संस्कृति कहा गया। इसके विभिन्न पुरास्थलों जैसे ब्रह्मगिरि, मास्की, आदिछ्णल्लूर, हल्लूर इत्यादि हैं। उत्तरनूर से राख का टीला पाया गया है। यह पुरास्थल नवपाषण काल से संबंधित है।

94. निम्नलिखित पुरातत्ववेत्ताओं को उनके कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (i) जेम्स फर्ग्यूसन
- (ii) जेम्स प्रिंसेप
- (iii) एलेक्जेंडर कनिंघम
- (iv) एडवर्ड थामस

कूट :

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| (a) (ii) (i) (iv) (iii) | (b) (iv) (ii) (i) (iii) |
| (c) (iii) (iv) (ii) (i) | (d) (i) (iii) (ii) (iv) |

उत्तर-(a) **(UGC Net.- III Paper Dec. 2013)**

व्याख्या—भारतीय पुरातत्व विभाग के जन्मदाता अलेक्जेंडर कनिंघम को माना जाता है। सर्वप्रथम 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने अशोक के दिल्ली टोपारा अभिलेख को पढ़ने में सफलता पायी।

95. लेवालेवा तकनीक द्वारा बनाए गए फलक उपकरण निम्नांकित किस भूगर्भीय युग की विशेषता है?

- (a) निम्न प्लास्टोसीन
- (b) होलोसीन
- (c) उच्च प्लास्टोसीन
- (d) मध्य प्लास्टोसीन

उत्तर-(d) **(UGC Net.- II Paper Dec. 2013)**

व्याख्या—लेवालेवा तकनीक मध्यपुरापाषण काल की विशेषता है। इस समय क्वार्टजाइट पत्थरों के स्थान पर जेस्पर, चर्ट, फ्लिट आदि पत्थर प्रयुक्त होते थे। फलकों की अधिकता के कारण इस काल को फलक संस्कृति की संज्ञा दी जाती है। फलक एक प्रकार का औजार होता था जिसे पत्थर को तोड़कर बनाया जाता था।

96. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और निम्न कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

सूची-I

- (A) सोहागीघाट
- (B) बालाथल
- (C) भीमबेटका
- (D) बुर्जहोम

कूट :

- | | | | |
|------------|------------|------------|------------|
| (A) | (B) | (C) | (D) |
| (a) (iii) | (iv) | (i) | (ii) |
| (b) (iv) | (iii) | (ii) | (i) |
| (c) (i) | (ii) | (iv) | (iii) |
| (d) (ii) | (i) | (iii) | (iv) |

उत्तर-(b)

सूची-II

- (i) कश्मीर नवपाषणात्र
- (ii) वी. एस. वाकणकर
- (iii) अहाड़ संस्कृति स्थल
- (iv) ए. सी. एल. कालाइल

(UGC Net.- II Paper Dec. 2013)

व्याख्या—

- A. सोहागीघाट I. ए. सी. एल. कालाइल

- B. बालाथल II. अहाड़ संस्कृति स्थल

- C. भीमबेटका III. बी.एस. वाकणकर

- D. बुर्जहोम IV. कश्मीर नवपाषण

बुर्जहोम भारत के जम्मू कश्मीर राज्य में नवपाषण कालीन स्थल है। यहाँ पर गर्त आवास के साक्ष्य मिलते हैं। यहाँ पर मानव के साथ कुते के शवाधान के साक्ष्य मिलते हैं।

97. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए।

सूची-I

सूची-II

- (a) सोन संस्कृति/सोहन संस्कृति (i) मध्य पुरापाषण संस्कृति

- (b) नेवासा संस्कृति (ii) निम्न पुरापाषण संस्कृति

- (c) बागोर संस्कृति (iii) नवपाषण संस्कृति

- (d) कोल्डिहवा संस्कृति (iv) उच्च पुरापाषण संस्कृति

कूट :

- | | | | |
|-------------------------|-------------------------|-------------------------|-------------------------|
| (a) | (b) | (c) | (d) |
| (a) (i) (ii) (iii) (iv) | (b) (iv) (ii) (i) (iii) | (c) (iii) (ii) (i) (iv) | (d) (ii) (i) (iv) (iii) |

उत्तर-(d)

(UGC Net.- III Paper June. 2014)

व्याख्या—सही सुमेलित उत्तर इस प्रकार है—

सूची-I

सूची-II

- (a) सोन संस्कृति/ सोहन संस्कृति (i) निम्न पुरापाषण संस्कृति

- (b) नेवासा संस्कृति (ii) मध्य पुरापाषण संस्कृति

- (c) बागोर संस्कृति (iii) उच्च पुरापाषण संस्कृति

- (d) कोल्डिहवा संस्कृति (iv) नवपाषण संस्कृति

98. निम्नलिखित में से किस ताप्राशमकालीन स्थल के ताँबे के प्रयोग का साक्ष्य प्राप्त हुआ है, किन्तु प्रस्तर उपकरण प्राप्त नहीं हुए?

- (a) अहाड़ (b) गिलुन्द
- (c) कायथा (d) नवदाटोली

उत्तर-(a)

(UGC Net.- III Paper June. 2014)

व्याख्या—अहाड़ का प्राचीन नाम ताम्बवती अर्थात् ताँबे वाली जगह है। क्योंकि यहाँ पत्थर की जगह ज्यादातर ताँबे के औजार मिले हैं यहाँ से काले और लाल मृदभाण्ड भी मिले हैं। जिन्हें सफेद रैजिक चित्रों से सजाया गया है।

99. किस क्षेत्र के उत्खनन से पता चलता है कि वहाँ नवपाषाण कालीन मानव जमीन में गड्ढा खोद कर रहता था?

- (a) कर्नाटक
- (b) असम
- (c) कश्मीर
- (d) मध्य प्रदेश

उत्तर-(c) (UGC Net.- II Paper June, 2014)

RPSC 2018

UPPCS (Pre) Indian History, 2005

व्याख्या- कश्मीर क्षेत्र के उत्खनन से पता चलता है कि वहाँ नवपाषाण कालीन मानव, जमीन में गड्ढा खोदकर रहता था। इसका साक्ष्य बुर्जहोम से प्राप्त होता है। विदित है कि प्रथम नवपाषाण कालीन स्थान की खोज कश्मीर में हुई थी। नव पाषाण काल की अर्थव्यवस्था का आधारभूत तत्व खाद्य उत्पादन तथा पशुओं को पालतू बनाने की जानकारी है।

100. निम्नलिखित किस स्थल से लघुपाषाणिक संदर्भ में एक हाथीदांत का लटकन प्राप्त हुआ था?

- (a) बागोर
- (b) दमदाम
- (c) महदहा
- (d) सराय नाहर राय

उत्तर-(b) (UGC Net.- III Paper Dec. 2014)

व्याख्या- उ.प्र. के प्रतापगढ़ जिले में स्थित मध्यपाषाण कालीन स्थल दमदाम से हाथी दांत का लटकन तथा हड्डियों से बने अनेक प्रकार के औजार प्राप्त हुए हैं। इसके अलावा यहाँ से 41 मानव शवाधान तथा गर्त चूल्हें प्रकाश में आये हैं।

101. झूकर संस्कृति निम्न में से किस स्थल पर प्राप्त हुई है?

- (a) अंजीरा
- (b) चन्द्रहुड़ी
- (c) कुल्ली
- (d) राना घुण्डई

उत्तर-(b) (UGC Net.- III Paper June, 2015)

व्याख्या- मोहनजोड़ो के दक्षिण में स्थित चन्द्रहुड़ी नगर की खोज सर्वप्रथम 1934 में एन. गोपाल मजूमदार ने किया तथा 1935 ई. में मैकें द्वारा यहाँ उत्खनन कराया गया। चन्द्रहुड़ों में सैन्धव कालीन संस्कृति के अतिरिक्त प्राक् सैन्धव संस्कृति, झूकर संस्कृति एवं झांगर संस्कृति के भी अवशेष मिले हैं।

102. हथनोरा का मानवसम जीवाश्म :

- (a) होमो इरेक्टस है
- (b) होमो हैबिलिस है
- (c) होमो सैपियंस है
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं है

उत्तर-(a) (UGC Net.-II Paper June, 2015)

व्याख्या- भूगर्भीय सर्वे आफ इंडिया (जी एस आई) के वैज्ञानिक अरुण सोनकिया के नेतृत्व वाली टीम ने 5 दिसंबर 1982 को नर्मदा नदी के किनारे हथनोरा (मध्य प्रदेश) होमो इरेक्टस का जीवाश्म खोजा था। शोध टीम का दावा था कि यह महिला का जीवाश्म है। ऐसा माना जाता है कि होमोइरेक्टस आधुनिक मानव होमो सैपियंस के पूर्वज हैं और लगभग दो लाख साल पहले इनका अस्तित्व था।

103. शवाधान प्रचलन शुरू किया गया है?

- (a) होमो सैपियन द्वारा
- (b) होमो इरेक्टस द्वारा
- (c) होमो निअंडरथल द्वारा
- (d) होमो हैबिलिस द्वारा

उत्तर-(c) (UGC Net.-II Paper June, 2015)

व्याख्या- होमो निअंडरथल मध्यपुराषाण काल का प्रतिनिधित्व करता था। निअंडरथल मानव मृतकों का आदर करता था और शवों को पूजा की सामग्रियों सहित कब्र में दफनाता था। इस प्रकार उसका किसी तरह के धर्म और पुनर्जन्म में विश्वास था। निअंडरथल के बाद आज से लगभग चालीस हजार वर्ष पूर्व आधुनिक होमो सैपियन्स का प्रारुद्धाव हुआ। इसकी कई उपजातियाँ थीं जैसे- क्रोमैग्नन, ग्रिमाल्डी और चान्सलैंड आदि।

104. कहाँ पर सबसे ज्यादा संख्या में ताम्र संचय मिला है?

- (a) जोधपुर
- (b) बहादुराबाद
- (c) सईपई
- (d) गुगेरिया

उत्तर-(d) (UGC Net.-II Paper June, 2015)

व्याख्या- सबसे ज्यादा संख्या में ताम्र संचय मध्य प्रदेश के गुगेरिया से प्राप्त हुई है। इनमें 424 ताँबे के औजार और 102 चाँदी के पतले पत्थर हैं। लेकिन इन ताम्रनिधियों में से लगभग आधी गंगा यमुना दोआब में केन्द्रित है। इन ताम्रनिधियों का सम्बन्ध कभी-कभी गैरिक मृदमाण्ड (O.C.P.) से भी लगाया जाता है।

105. भारत में प्राचीनतम चूल्हे का पुरातात्त्विक अवशेष मिला है :

- (a) बिला सुरगाम से
- (b) हुंसी से
- (c) भीमबेटा से
- (d) महगड़ा से

उत्तर-(a) (UGC Net.- II Paper Dec. 2015)

व्याख्या- भारत में प्राचीनतम चूल्हे का पुरातात्त्विक साक्ष्य आन्ध्र प्रदेश के कुर्नूल जिले में स्थित बिला सुरगाम से प्राप्त हुआ है।

106. दक्षिण एशिया में कहाँ पर सबसे प्राचीनतम गेहूँ-जौ की खेती का प्रमाण मिला है?

- (a) पंजाब
- (b) बलूचिस्तान
- (c) सिंध
- (d) राजस्थान

उत्तर-(b) (UGC Net.-II Paper Dec. 2015)

व्याख्या- दक्षिण एशिया में बलूचिस्तान के मेहरगढ़ (पाकिस्तान) नामक स्थल के उत्खनन से तीन सांस्कृतिक चरण नव पाषाणकाल, हड्डिया पूर्व व हड्डियाई स्तर प्राप्त होते हैं। यह भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीनतम कृषक बस्ती थी और यहाँ 7000 B.C. के लगभग गेहूँ, जौ और मसूर की खेती का साक्ष्य मिला है।

107. कहाँ पर भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे बड़ा अर्धवृत्ताकार पूजास्थल खोजा गया है?

- (a) सिरसुख
- (b) सिरकप
- (c) कौशाम्बी
- (d) अनुगाधापुर

उत्तर-(b) (UGC Net.-II Paper Dec. 2015)

व्याख्या- भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे बड़ा अर्धवृत्ताकार पूजास्थल सिरकप से प्राप्त हुआ है। यह स्थल तक्षशिला (आधुनिक पाकिस्तान) में स्थित है। यहाँ से सूर्य मंदिर, अर्धवृत्ताकार मंदिर, स्तूप आदि प्राप्त हुए हैं। सिरकप का निर्माण द्वितीय शताब्दी ई.पू. में इंडो-ग्रीक शासक डेमेट्रियस द्वारा किया गया था, जिसका जीर्णोद्धार मेनेण्डर प्रथम द्वारा किया गया था। सिरकप का उत्खनन सर्वप्रथम जॉन मार्शल तत्पश्चात् मॉटिमर ह्वीलर द्वारा किया गया।

108. प्रागैतिहासिक युग में मानव कहाँ रहता था?

- (a) मचान पर
- (b) कन्दरा में
- (c) झोपड़ी में
- (d) इन सभी में

उत्तर-(d) TGT History, 2010

व्याख्या—जिस काल में मनुष्य ने घटनाओं का कोई लिखित विवरण उद्दत नहीं किया, उसे प्रागैतिहासिक काल कहते हैं। इस काल का मानव, मचान, कन्दरा एवं झोपड़ी में निवास करता था।

109. नवपाषण काल में वह कौन-सा स्थान था, जहाँ से बड़ी संख्या में हड्डी के बने औजार एवं हथियार प्राप्त हुए हैं?

- | | |
|------------|-----------------|
| (a) चिरांद | (b) छोटा नागपुर |
| (c) चुनार | (d) झूँसी |

उत्तर—(a)

PGT History, 2005
PGT History, 2009

व्याख्या—1962-63 ईस्वी में प्रो. वी. के. सिन्हा के नेतृत्व में बिहार के चिरांद नामक ग्रामीण स्थल की खुदाई के बाद नवपाषाणिक अवशेष प्राप्त हुए। खुदाई के दौरान भारी मात्रा में हिरन के सींगों द्वारा निर्मित हथियार और औजार प्राप्त हुए हैं।

110. प्राचीन पाषाण युग के निवासियों को निम्नलिखित में से किस विषय का ज्ञान था?

- | | |
|-------------|----------------|
| (a) चिरांकन | (b) कृषि कार्य |
| (c) शिकार | (d) पशुपालन |

उत्तर—(c)

PGT History, 2004

व्याख्या—प्राचीन पाषाणकाल के हथियारों के अवशेष मिर्जापुर (उ. प्र.) की बेलन घाटी पंजाब की सोहन नदी की घाटी, तथा मध्य प्रदेश में भीमबेटका की गुफाओं से प्राप्त हुआ है। इस काल का मानव आग से अनभिज्ञ था। मानव पूर्णतः आखेटक का जीवन जीता था तथा समूहों में कन्दराओं तथा गुफाओं में रहता था।

111. निम्नलिखित में से कौन सा नवपाषाण कालीन पुरातात्त्विक स्थल राख के टीलों के लिए नहीं जाना जाता?

- | | |
|-------------|--------------|
| (a) उत्तरूर | (b) पालवाय |
| (c) कूपगल | (d) बुर्जहोम |

उत्तर—(d)

UGC NET-II Paper Jan. 2017

व्याख्या—बुर्जहोम नामक पुरास्थल की खोज 1935 ई. में डी. टेरा तथा पीटरसन ने की थी। बुर्जहोम की खुदाई से गड्ढे वाले घरों के अवशेष मिले हैं। शवाधान के जो उदाहरण मिलते हैं उनसे पता चलता है कि मनुष्य के साथ-साथ पातलू कुत्ते को भी दफनाने की प्रथा प्रचलित थी। अतः बुर्जहोम राख के टीलों के लिए नहीं जाना जाता है।

112. सूची-I सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए :

| सूची-I (मध्य पाषाणकालीन स्थल) | सूची-II (स्थान) |
|----------------------------------|--------------------|
| A. बीरभानपुर | (i) बिहार |
| B. लोटेश्वर | (ii) गुजरात |
| C. पैसरा | (iii) उत्तर प्रदेश |
| D. सरायनाहर राय | (iv) पश्चिम बंगाल |

कूट :

- | | | | |
|----------|------|-------|-------|
| A | B | C | D |
| (a) (ii) | (i) | (iv) | (iii) |
| (b) (iv) | (ii) | (iii) | (i) |
| (c) (i) | (ii) | (iii) | (iv) |
| (d) (iv) | (ii) | (i) | (iii) |

उत्तर—(d)

UGC NET-III Paper Jan. 2017

**व्याख्या—सूची-I
(मध्य पाषाणकालीन स्थल)**

- A. बीरभानपुर
- B. लोटेश्वर
- C. पैसरा
- D. सरायनाहर राय

**सूची-II
(स्थान)**

- पश्चिम बंगाल
- गुजरात
- बिहार
- उत्तर प्रदेश

113. भारतीय उपमहाद्वीप में आखेट एवं भोजन-संग्रह की अवस्था से पशुपालन एवं कृषि की अवस्था में परिवर्तन के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं :

- | | |
|-------------------------|------------------|
| (a) अंजिरा से | (b) दम्भ सदात से |
| (c) किले गुल मोहम्मद से | (d) मेहरगढ़ से |

उत्तर—(d)

UGC NET-III Paper Jan. 2017

व्याख्या—भारतीय उपमहाद्वीप में आखेट एवं भोजन-संग्रह की अवस्था से पशुपालन एवं कृषि की अवस्था में परिवर्तन के प्राचीनतम साक्ष्य मेहरगढ़ से प्राप्त हुए हैं। सिद्ध और बलूचिस्तान की सीमा पर कच्छी मैदान में बोलन नदी किनारे मेहरगढ़ से पहला स्पष्ट साक्ष्य प्राप्त हुआ है। यहाँ से कृषिजन्य गेहूँ और जौ की विभिन्न किस्में प्राप्त हुई हैं। इसकी प्रमाणित तिथि सातवीं सहस्राब्दि ईसा पूर्व (7000 ई.पू.) है। किले गुलमुहम्मद की तिथि 3500 ई.पू. है।

114. धातु की खोज मानवीय इतिहास की एक क्रान्तिकारी घटना थी। सर्वाधिक ताँबा देने वाली खानें भारत के किस भाग में स्थित थीं?

- | | |
|------------------------|-------------------------|
| (i) बिहार | (ii) गुजरात |
| (iii) राजस्थान | (iv) तमिलनाडु |
| (a) केवल (i) | (b) केवल (ii) और (iii) |
| (c) (i), (ii) और (iii) | (d) (ii), (iii) और (iv) |

उत्तर—(c)

UGC NET-III Paper Jan. 2017

व्याख्या—धातु की खोज मानवीय इतिहास की एक क्रान्तिकारी घटना थी। सर्वाधिक ताँबा देने वाली खानें भारत के बिहार, गुजरात और राजस्थान में स्थित थीं। राजस्थान के खेतड़ी की खानों से ताँबा प्राप्त होता था। इसके अतिरिक्त बिहार और गुजरात से भी ताँबा प्राप्त किया जाता था। बिहार का सिंहभूमि जिला तथा गुजरात का कच्छ क्षेत्र इसके लिए प्रसिद्ध था।

115. निम्नलिखित में से कौन नवपाषाण कालीन स्थल नहीं है?

- | | |
|----------------|---------------|
| (a) ब्रह्मगिरि | (b) संगनकल्लु |
| (c) अरिकामेडु | (d) पिकलीहल |

उत्तर (c)

UGC NET-II Paper July, 2017

व्याख्या—भारत के केन्द्र शासित राज्य पांडिचेरी में स्थित अरिकामेडु ईसा की प्रथम शताब्दी का पुरास्थल है, जिसका उत्खनन 1945 में मार्टिमर व्हीलर ने करवाया था। यहाँ से भारत - रोम व्यापारिक संबंध के साक्ष्य मिले हैं। ब्रह्मगिरि, संगनकल्लु तथा पिकलीहल दक्षिण भारत के नवपाषाणिक पुरास्थल हैं।

116. उत्खनित स्थल हस्तिनापुर का सांस्कृतिक क्रम नीचे से ऊपर की ओर निम्नानुसार है:

- (i) कुषाण काल
- (ii) एन.बी.पी. मृद्भाण्ड काल
- (iii) ओ.सी.पी. काल
- (iv) पी.जी.डब्लू काल

कूट:

- | | |
|----------------------------|----------------------------|
| (a) (ii), (iii), (i), (iv) | (b) (iii), (ii), (iv), (i) |
| (c) (iii), (iv), (ii), (i) | (d) (i), (ii), (iii), (iv) |

UGC NET-III Paper July, 2017

उत्तर (c) हस्तिनापुर का सांस्कृतिक क्रम (उत्खनन के बाद)

| | |
|---|---------------------|
| ओ.सी.पी. काल | - ताम्रपाषाण काल |
| पी.जी.डब्लू. काल | - लौहकालीन |
| एन.बी.पी. मृद्भाण्ड काल | - छठी शताब्दी ई.पू. |
| कुषाण काल | - प्रथम शताब्दी |
| उ.प्र. के मेरठ जिले में स्थित इस पुरास्थल का उत्खनन बी.बी.लाल ने 1950-52 में करवाया था। | |

117. निम्नलिखित में से किन स्थलों पर मध्यपाषाण काल में पशु-पालन के प्रमाण मिले हैं?

- | | |
|----------------|-------------|
| (i) आदमगढ़ | (ii) बागोर |
| (iii) लोटेश्वर | (iv) रतनपुर |

कूट:

- | | |
|------------------------|-------------------------|
| (a) (i) और (ii) | (b) (ii) और (iii) |
| (c) (i), (ii) और (iii) | (d) (ii), (iii) और (iv) |

UGC NET-III Paper July, 2017

उत्तर (c) मध्यप्रदेश के आदमगढ़, राजस्थान के बागोर तथा गुजरात के पाटन जिले में स्थित लोटेश्वर ऐसे मध्यपाषाणिक पुरास्थल हैं, जहाँ से पशुपालन के साक्ष्य मिले हैं।

118. सूची-I के विषय को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

| सूची-I (पुरावशेष) | | सूची-II (प्राप्ति स्थान) | |
|----------------------------|-------------|-----------------------------|--|
| (A) राख का टीला | (i) कन्हेरी | | |
| (B) आयगपट्ट | (ii) मथुरा | | |
| (C) एकादशमुखी बोधिसत्त्व | (iii) साँची | | |
| (D) प्रस्तर धातु-मञ्चूषाएँ | (iv) उत्तर | | |

कूट :

| | A | B | C | D |
|-----|----|-----|-----|-----|
| (a) | i | iii | ii | iv |
| (b) | iv | ii | i | iii |
| (c) | i | iv | iii | ii |
| (d) | iv | i | ii | iii |

UGC NET-III Paper July, 2017

उत्तर (b) सही सुमेल इस प्रकार हैं-

| | |
|------------------------|-----------|
| राख का टीला | - उत्तर |
| आयगपट्ट | - मथुरा |
| एकादशमुखी बोधिसत्त्व | - कन्हेरी |
| प्रस्तर धातु-मञ्चूषाएँ | - साँची |

119. पालतू भैंस का प्राचीनतम साक्ष्य भारतीय उपमहाद्वीप में कहाँ से प्राप्त होता है?

- | | |
|---------------|--------------|
| (a) मोहनजोदहो | (b) धौलावीरा |
| (c) मेहरगढ़ | (d) राखीगढ़ी |

उत्तर (c) UPPCS (Pre) Indian History Spl., 2004

UPPCS (Pre) Indian History, 2003

UPPCS (Pre) Indian History, 2005

व्याख्या- पालतू भैंस का प्राचीनतम साक्ष्य भारतीय महाद्वीप में मेहरगढ़ से प्राप्त हुआ है जिसमें सिर नीचे किये हुए रम्भाते हुए भैंसों का वर्णन है जो लड़ने की मुद्रा में हैं। सैन्धव निवासियों के पालतू पशुओं में बैल, गाय, भैंस, कुत्ते, सूअर, भेड़-बकरी, हिरण, खरगोश आदि थे। हाथी से उनका परिचय था क्योंकि हाथी दाँत का प्रयोग कलात्मक वस्तुओं के निर्माण में किया गया था। पक्षियों में मुर्गा, बत्तख, तोता, हंस आदि पाले जाते थे। कुछ पशुओं की धार्मिक मान्यता थी। कुछ को माँस के लिए पाला गया था। यह निश्चित नहीं है कि अश्व से उनका परिचय था कि नहीं एस.आर. राव का विचार है कि लोथल तथा रंगपुर से अश्व की मिट्टी की मर्तियाँ मिली हैं। इसी प्रकार कच्छ स्थित सुरकोटदा स्थल से पालतू घोड़े की अस्थियाँ मिली हैं।

120. पूर्व पाषाण युग के लोगों का प्रमुख उद्यम क्या था?

- | | |
|-------------|-----------------------------|
| (a) शिकार | (b) कृषि |
| (c) पशुपालन | (d) उपरोक्त में से कोई नहीं |

उत्तर-(a) PGT History, 2000

Asharam Paddhati Lect. Exam. 2009

व्याख्या – पूर्व पाषाणकालीन लोगों का प्रमुख उद्यम शिकार था। ध्यातव्य हो कि इस काल के लोगों को कृषि सम्बन्धी जानकारी नहीं थी। अतएव उनका जीवन जंगली पशुओं एवं नदियों, झीलों से प्राप्त होने वाली मछलियों तथा अन्य जंगली फलों पर निर्भर था।

121. मध्य पाषाण काल के लोगों की मुख्य विशेषता क्या थी?

- | |
|--------------------------------|
| (a) लघु पाषाणोपकरणों का प्रयोग |
| (b) घरों का प्रयोग |
| (c) कपड़ों का प्रयोग |
| (d) उपरोक्त में से कोई नहीं |

उत्तर-(a) PGT History, 2000

व्याख्या – मध्य पाषाण काल के लोगों की प्रमुख विशेषता थी – लघु पाषाणोपकरणों का प्रयोग। इस काल के औजार छोटे-छोटे पथरों से बने हुए थे। कठिपय ऐसे भी औजार होते थे जिनका आकार ज्यामितीय होता था।

122. क्या मिट्टी के बर्तन बनाना नवपाषाण काल से संबंधित है?

- | | |
|---------------------|-------------------------|
| (a) सत्य | (b) असत्य |
| (c) सत्य हो सकता है | (d) असत्य भी हो सकता है |

उत्तर-(a) PGT History, 2000

व्याख्या – कुम्भकारी सर्वप्रथम नवपाषाण काल में दृष्टिगोचर होती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मिट्टी के बर्तन बनाना नवपाषाण काल से सम्बन्धित है, सत्य है।

123. चावल का प्राचीनतम उल्लेख किस स्थान से संबंधित है?

- | | |
|--------------|-------------------|
| (a) महदहा | (b) सराय नाहर राय |
| (c) कालिडहवा | (d) भीमबेटका |

उत्तर-(c) PGT History, 2000

PGT History, 2005

व्याख्या – चावल का प्राचीनतम उल्लेख विन्ध्य क्षेत्र के प्रमुख नवपाषाणकालीन पुरास्थल कालिडहवा के उत्खनन से प्राप्त हुआ है। इस स्थल से धान की खेती का प्राचीनतम प्रमाण (ई.पू. 7000-6000) होता है।

124. प्राचीन भारत में कृषि के प्राचीनतम उल्लेख कहाँ से मिलते हैं?

- (a) बोरी (b) मेहरगढ़
(c) इमामगांव (d) गिलुन्द

उत्तर-(b)

PGT History, 2000

व्याख्या- प्राचीन भारत में कृषि के प्राचीनतम उल्लेख मेहरगढ़ से प्राप्त हुआ है। यह वर्तमान पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रान्त में स्थित है। यहाँ पर नवपाषाणिक प्राचीनतम बस्ती एवं कच्चे घरों के साथ-साथ गेहूँ की तीन एवं जौ की दो किस्मों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

125. पाषाणयुगीन मानव को आग की जानकारी हुई थी-

- (a) निम्न पुरापाषाण काल में (b) उच्च पुरापाषाण काल में
(c) मध्यपाषाण काल में (d) नवपाषाण काल में

उत्तर-(d)

PGT History, 2003

व्याख्या- पाषाणकालीन मानव को सर्वप्रथम अग्नि की जानकारी नवपाषाण काल में हुई जब पत्थर से टकराकर उसने अग्नि प्रज्ज्वलित करना सीखा, जिससे उसके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। अग्नि के उपयोग से उसे अब भुना हुआ मांस मिलने लगा तथा खाने के लिए पका हुआ भोजन। अग्नि के द्वारा प्रकाश का भी काम लिया जाता था।

126. हैण्डेक्स (Hand-Axe), क्लेवर (Claver) आदि उपकरण किस पाषाणकालीन परम्परा के परिचायक हैं-

- (a) पुरापाषाण काल (b) निम्न पुरापाषाण काल
(c) मध्यपाषाण काल (d) नवपाषाण काल

उत्तर-(b)

PGT History, 2003

व्याख्या- कुल्हाड़ी या हस्त कुठार (Hand-Axe) विदारणी (क्लेवर Claver) और गंडासा (खंडक) आदि उपकरण निम्न पुरापाषाणकालीन परम्परा के परिचायक हैं। निम्न पुरापाषाण युग के अधिसंख्य स्थल सिन्धु नदी की सहायक 'सोहन नदी की घाटी' में मिलते हैं।

127. ब्लेड-ब्यूरिन प्रकार के उपकरण निम्नलिखित में से किस परम्परा के परिचायक लक्षण हैं?

- (a) उच्च पूर्व पाषाण काल (b) मध्य पूर्व पाषाण काल
(c) मध्य पाषाण काल (d) नव पाषाण काल

उत्तर - (a)

PGT History, 2004

G.I.C. Lect. Exam 2012

व्याख्या- मध्यपूर्व पाषाण काल के बाद उच्च पूर्व पाषाणकाल आया। इसका प्रधान पाषाणोपकरण ब्लेड है। ब्लेड पतले तथा संकरे आकार वाला वह पाषाण फलक है जिसके दोनों किनारे समानान्तर होते हैं। यह लम्बाई में अपने चौड़ाई से दूना होता है।

128. आभूषणों से युक्त मध्य पाषाणिक मानव समाधियाँ प्राप्त हुई हैं-

- (a) भीमबेटा से (b) बागोर से
(c) महदहा से (d) सराय नाहर राय से

उत्तर - (c)

PGT History, 2004

व्याख्या- प्रतापगढ़ जिले की पट्टी तहसील स्थित महदहा नामक पुरास्थल से सर्वप्रथम मृग शृंगों की माला तथा हड्डियों के आभूषण मिले हैं। इस पुरास्थल की खोज जी. आर. शर्मा ने की थी।

129. खाद्य उत्पादनपरक अर्थव्यवस्था सम्बन्धित है –

- (a) मध्य पूर्वपाषाण काल से (b) उच्च पूर्वपाषाण काल से
(c) मध्यपाषाण काल से (d) नवपाषाण काल से

उत्तर - (d)

PGT History, 2004

व्याख्या- नवपाषाणकालीन संस्कृति अपनी पूर्व संस्कृतियों की अपेक्षा अधिक विकसित थी। इस काल का मानव खाद्य उत्पादक बना, वह कृषि कर्म जानता था और पशुओं को भी पालता था। इस काल में मानव खानाबदेश नहीं था। वह स्थायी निवास बनाता था।

130. गंगा घाटी में धान उत्पादन के प्राचीनतम प्रमाण किस स्थल से प्राप्त हुए हैं?

- (a) सौहंगौरा (b) इमलीडीह
(c) लहुरादेव (d) झूँसी

उत्तर-(c)

PGT History, 2004

व्याख्या – गंगा घाटी में धान उत्पादन का प्राचीनतम प्रमाण लहुरादेव नामक स्थल से प्राप्त हुआ है। यह उत्तर प्रदेश के संतकबीर नगर जिले में स्थित है, यहाँ पर 9000-8000 ई.पू. उत्खनन में धान की भूंसी के साक्ष्य मिले हैं।

131. प्रागैतिहास के अध्ययन का विषय है –

- (a) निरक्षर समाजों का इतिहास
(b) साक्षर समाजों का इतिहास
(c) सभ्य समाजों का इतिहास
(d) नगरीय समाजों का इतिहास

उत्तर-(a)

PGT History, 2005

व्याख्या- प्रागैतिहास से आशय उस काल से है जब मनुष्य लिपि अथवा लेखन कला का विकास नहीं कर पाया था। इस प्रागैतिहास काल की सीमा में सभी पाषाणयुगीन सभ्यताएँ आती हैं। आगे चलकर सेंधव सभ्यता से कीलाक्षर लिपि का प्रमाण मिला है। वस्तुतः यह अपठनीय रही है। अनन्तर वैदिक काल में शिक्षा पद्धति मौखिक थी। इन दोनों कालों को आद्य इतिहास के अन्तर्गत रखा जाता है। वह काल जिसका इतिहास लिखित तथ्यों के आधार पर विदित होता है उसे ऐतिहासिक काल कहते हैं।

132. हथनौरा में पूर्वपाषाणिक मानव के जीवाशमों की खोज की गई थी—

- (a) एच.डी. सांकलिया द्वारा (b) ए.के. सोनकिया द्वारा
(c) बी.बी.लाल द्वारा (d) जी.आर. शर्मा द्वारा

उत्तर-(b)

PGT History, 2005

व्याख्या- हथनौरा में पूर्व पाषाणिक मानव के जीवाशमों की खोज ए.के. सोनकिया (अरुण कुमार सोनकिया) द्वारा की गयी थी। यह स्थल नर्मदा नदी के उत्तरी तट पर मध्य नर्मदा घाटी में होशंगाबाद जिले में स्थित है। 5 दिसम्बर, 1982 में खुदाई के अनन्तर मानव की एक खोपड़ी का जीवाशम मिला। जिसे होमोइरेक्टस वर्ग के अन्तर्गत रखा गया। यह प्राप्त जीवाशम मानव अवशेष का सर्वप्राचीन नमूना है।

133. फसल काटने का आयताकार पाषाण उपकरण (हर्वेस्टर) किस नवपाषाणिक संस्कृति से प्राप्त हुआ है?

- (a) कश्मीर (b) गंगाघाटी
(c) विन्ध्य क्षेत्र (d) दक्षिण भारत

उत्तर-(a)

PGT History, 2005

व्याख्या—फसल काटने के आयताकार पाषाण उपकरण (हॉर्स्टर) कश्मीर नवपाषाणिक संस्कृति से प्राप्त होता है। यहाँ से प्राप्त प्रस्तर उपकरणों में दो छिद्र वाले हैंसिये या गड़से, तकुएँ गोफन पत्थर तथा पत्थर के उत्कीर्णक या तक्षक विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। द्विछिद्र वाले हैंसियों पर उकर कर अलंकरण के प्रमाण मिले हैं।

134. शवाधान में मानव के अवशेषों के साथ कुत्ते, बकरे जैसे पालतू पशुओं को दफनाने के साक्ष्य मिले हैं—

- | | |
|------------------|----------------|
| (a) बुर्जहोम में | (b) गुफकाल में |
| (c) मेहरगढ़ में | (d) चिरांद में |

उत्तर—(a)

PGT History, 2005

UPPCS (Pre) Indian History, 2006

व्याख्या—बुर्जहोम शवाधान में मानव के अवशेषों के साथ कुत्ते, बकरे जैसे पालतू पशुओं को दफनाने के साक्ष्य मिले हैं। बुर्जहोम शवाधान मुख्यतया आवासीय क्षेत्र में ही स्थित होते थे, शवाधान गर्त अण्डाकार होते थे तथा गर्त के किनारे चूने का प्लास्टर रहता था। मानव शवाधानों के साथ-साथ कुछ पशुओं के भी शवाधान भी प्राप्त हुए हैं जिसमें कुत्ते, भेड़िये तथा साकिन के शवाधान मुख्यतया मिले हैं। कुछ शवाधानों में कुत्तों को उसके मालिक के साथ दफनाया गया है। गर्तावास (गड्ढों वाले घर) भी बुर्जहोम की विशेषता रही है। इस पुरास्थल की खोज 1935 ई. में डी टेरा एवं पीटरसन ने की थी।

135. लम्बवत् पुरातात्त्विक उत्खनन के द्वारा किसी संस्कृति के निम्न में से किस पक्ष का विशेष ज्ञान होता है?

- | |
|------------------------------------|
| (a) संस्कृति के क्षेत्र विस्तार का |
| (b) संस्कृति के आकार का |
| (c) संस्कृति के स्वरूप का |
| (d) संस्कृति के काल मापन का |

उत्तर—(d)

PGT History, 2009

व्याख्या—लम्बवत् पुरातात्त्विक उत्खनन के द्वारा सम्पूर्ण संस्कृति का प्रत्यक्षीकरण नहीं हो पाता अपितु इससे विभिन्न संस्कृतियों के कालक्रम का ज्ञान प्राप्त होता है इस प्रकार की खुदाई में किसी स्थान की लम्बी-लम्बी खुदाई की जाती है।

136. पुरा पाषाण युग का प्रमुख औजार क्या था?

- | | |
|-------------------|-----------------------|
| (a) हस्तकुठार | (b) शल्क के बने फलक |
| (c) हड्डी के औजार | (d) इनमें से कोई नहीं |

उत्तर—(a)

PGT History, 2010

व्याख्या—पुरा पाषाण युग के प्रमुख औजार हैंड-ऐक्स (हस्तकुठार), क्लीवर और स्क्रेपर आदि थे। इस संस्कृति का प्रमुख उपकरण हस्तकुठार (हैंडएक्स) सर्वप्रथम 1863 ई. में रॉबर्ट ब्रूसफुट ने मद्रास के पास पल्लवरम् से प्राप्त किया था। इसके पश्चात् अतिरपक्रम् से भी पुरा पाषाण उपकरण खोजे गए। समग्र रूप से इन क्षेत्रों के उपकरणों को ‘मद्रासी संस्कृति’ से सम्बद्ध किया जाता है।

137. परिष्कृत औजारों का युग माना जाता है-

- | | |
|--------------------------|-------------------------|
| (a) निम्न पुरा पाषाण युग | (b) उच्च पुरा पाषाण युग |
| (c) नवपाषाण युग | (d) मध्यपाषाण युग |

उत्तर—(b)

PGT History, 2010

व्याख्या—उच्च पुरा पाषाण काल को परिष्कृत औजारों का युग माना जाता है। इय युग मे होमोसेपियन्स मानव द्वारा ब्लेड प्रधान उपकरणों का प्रयोग शुरू हुआ।

138. अनाज की उपज प्रथम बार प्रारम्भ हुई—

- | | |
|------------------------|-------------------------------|
| (a) नवपाषाण युग में | (b) मध्यपाषाण युग में |
| (c) पुरा पाषाण युग में | (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं |

उत्तर—(a)

PGT History, 2011

व्याख्या—अनाज का उत्पादन सर्वप्रथम नवपाषाण काल में हुआ। यही वह समय है जब मानव कृषि एवं पशुपालन से परिचित हुआ। भारतीय उपमहाद्वीप में कोलिड्हवा एवं मेहरगढ़ दो ऐसी नव-पाषाणकालीन बस्तियाँ थीं जहाँ से चावल एवं गेहूँ के स्पष्ट प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

139. तिथिक्रमानुसार निम्न को व्यवस्थित कीजिए—

- | | |
|-------------------|----------------|
| 1. पुरा पाषाण युग | 2. तांब युग |
| 3. मध्यपाषाण युग | 4. नवपाषाण युग |

विकल्प :

- | | |
|----------------|----------------|
| (a) 1, 2, 3, 4 | (b) 1, 2, 4, 3 |
| (c) 1, 4, 3, 2 | (d) 1, 3, 4, 2 |

उत्तर—(d)

PGT History, 2011

व्याख्या—भारतीय पाषाण कालीन संस्कृति का नामकरण तिथिक्रमानुसार—

(a) पुरा पाषाण युग (b) मध्यपाषाण युग (c) नवपाषाण युग पाषाण युग की समाप्ति के बाद धातुओं के प्रयोग का युग प्रारम्भ हुआ। पत्थर तथा ताँबे का उपयोग साथ-साथ दिखाई देता है इसे ही ताप्र पाषाणिक (chalcolithic) काल कहा गया।

140. निम्नलिखित स्थलों में से कौन-सा स्थल प्रागैतिहासिक शैल चित्रकला के लिए प्रसिद्ध है?

- | | |
|--------------|-------------|
| (a) अजंता | (b) बाध |
| (c) भीमबेटका | (d) अमरावती |

उत्तर—(c)

PGT History, 2013

G.I.C. Lect. Exam 2015

UPPCS (Pre) Indian History, 2007

GIC प्रवक्ता परीक्षा, 2018

व्याख्या—भीमबेटका नामक प्रागैतिहासिक स्थल शैल चित्रकला के लिए प्रसिद्ध है। यह पुरा पाषाण कालीन स्थल मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित है।

141. अधोलिखित संस्कृतियों में कौन पाषाण-युगीन संस्कृति नहीं है?

- | | |
|------------------------|-----------------------|
| (a) सोहन संस्कृति | (b) सोथी संस्कृति |
| (c) मद्रासियन संस्कृति | (d) विन्ध्यन संस्कृति |

उत्तर (b) **Asharam Paddhati Lect. Exam. 2009**

व्याख्या—सोहन संस्कृति, मद्रासियन संस्कृति तथा विन्ध्यन संस्कृति का सम्बन्ध पाषाण युगीन-संस्कृति से है। सोथी संस्कृति का सम्बन्ध-पाषाण युगीन संस्कृति से नहीं है।

142. हस्तकुठार उपकरण निम्नलिखित में से किस विधि का उपकरण था?

- | | |
|----------------------|-------------------|
| (a) यूनीफेसियल | (b) बाईफेसियल |
| (c) दोनों विधियों से | (d) रीटचिंग उपकरण |

उत्तर—(b) **Asharam Paddhati Lect. Exam. 2012**

व्याख्या-परम्परागत रूप से भारतीय पूर्व पाषाण काल दो उपकरण परम्पराओं में विभाजित हैं-सोन या सोहन संस्कृति और एशूली या मद्रासी संस्कृति में सोन या सोहन संस्कृति में बटिकाशम या मूल उपकरणों और खंडक उपकरण परम्परा विद्यमान थी जबकि एशूली या मद्रास से संस्कृति में हस्तकुठार और विदारणी प्रमुख थी। 1863 में मद्रास से सर्वप्रथम हस्तकुठार उपकरण की खोज की गयी जो द्विपाश्वीं (बाई फेसियल) शतक शिल्प उपकरण था।

143.लघु-पाषाण उपकरण अधोलिखित किस संस्कृति के प्रमुख उद्योग हैं?

- (a) निम्न पुरापाषाणिक संस्कृति
- (b) मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति
- (c) ऊच्च पुरापाषाणिक संस्कृति
- (d) मध्य पाषाणिक संस्कृति

उत्तर-(d) Asharam Paddhati Lect. Exam. 2012

व्याख्या- लघु पाषाण उपकरण (Microlithes) मध्यपाषाणिक संस्कृति का प्रमुख उद्योग है। इस काल में प्रस्तर के उपकरण प्रायः लघु आकार के मिलते हैं। इसी आकारगत लघुता के कारण पुरातात्त्विद् इन्हें लघु प्रस्तर उपकरण अथवा माइक्रोलिथ नाम से पुकारते हैं।

144.निम्न नवपाषाणिक स्थल से पशु बाड़े का प्रमाण मिला है :

- | | |
|------------|-----------------------------|
| (a) टोरवा | (b) कोल्डहवा |
| (c) महगड़ा | (d) उपरोक्त में से कोई नहीं |

उत्तर (c) G.I.C. Lect. Exam 2009

व्याख्या- महगड़ा, कोल्डहवा एवं पंचोह विध्य क्षेत्र में, प्रयागराज जिले में बेलन नदी क्षेत्र में स्थित नवपाषाणिक पुरातात्त्विक स्थल है। महगड़ा से पशुबाड़े का प्रमाण मिला है।

145.इनामगाँव प्रमुख पुरास्थल है

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| (a) कायथ संस्कृति का | (b) जोर्वे संस्कृति का |
| (c) अहाड़ संस्कृति का | (d) रंगपुर संस्कृति का |

उत्तर (b) G.I.C. Lect. Exam 2009

व्याख्या- जिस काल में मनुष्य ने पत्थर एवं ताँबे के औजारों का साथ-साथ प्रयोग किया, उस काल को ताम्र पाषाणिक काल कहते हैं। महाराष्ट्र के उत्तरनन से जोर्वे संस्कृति के स्थल प्राप्त हुए हैं जिसमें इनामगाँव सोनगाँव तथा नेवासा व दायमाबाद हैं।

146.महापाषाण संस्कृति सम्बद्ध है

- | | |
|--------------|---------------|
| (a) ताँबे से | (b) कांस्य से |
| (c) पीतल से | (d) लोहा से |

उत्तर (d) G.I.C. Lect. Exam 2009

व्याख्या- महापाषाण संस्कृति का सम्बन्ध लोहा से है लोहे की खोज लगभग 1000 ई.पू. में अतरंजीखेड़ा से हुई थी। सैंधववासियों को लोहे के बारे में जानकारी नहीं थी जबकि आर्य इससे परिचित थे।

147.प्रसिद्ध भीमबेटका गुफायें स्थित हैं

- | | |
|---------------|-------------------|
| (a) भोपाल में | (b) रायसेन में |
| (c) धार में | (d) होशंगाबाद में |

उत्तर (b) G.I.C. Lect. Exam 2009

व्याख्या- भीमबेटका रायसेन में स्थित है यहाँ करीब 500 गुफाएं स्थित हैं इसमें शैलचित्रों का अपूर्व संसार बसा है। भीमबेटका की खोज वी.ए. वाकानकर महोदय ने की थी। इसका समय लगभग 8000 ई.पू. से लेकर 1500 ई.पू. तक का है।

148.चावल का प्राचीनतम प्रमाण पाया गया है

- | | |
|---------------|----------------------|
| (a) बिहार में | (b) उत्तर प्रदेश में |
| (c) बंगाल में | (d) छत्तीसगढ़ में |

उत्तर (b)

G.I.C. Lect. Exam 2009

व्याख्या- नवपाषाण युग के प्रथम प्रस्तर उपकरण उ.प्र. के टोंस नदी घाटी में सर्वप्रथम 1860 में ले मेसुरियर ने प्राप्त किया था। नवपाषाण काल में धान (चावल) का प्राचीनतम प्रमाण उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में स्थित कोल्डहवा से प्राप्त हुआ है।

149.किस नवपाषाणिक स्थल से धान की खेती के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं?

- | | |
|--------------|--------------|
| (a) चिरांद | (b) लहुरादेव |
| (c) बुर्जहोम | (d) महगड़ा |

उत्तर (b)

G.I.C. Lect. Exam 2012

व्याख्या- भारत में कृषि का आविष्कार नवपाषाण काल में हुआ। प्रागैतिहासिक अन्न उत्पादक स्थल मेहरगढ़ पश्चिमी बलूचिस्तान में अवस्थित है। कृषि के लिए अपनाई गई सबसे प्राचीन फसल गेहूं एवं जौ थी। लहुरादेव नामक नवपाषाणिक स्थल से धान की खेती के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं।

150.मध्य पाषाणिक स्थल चोपनीमाण्डो स्थित है

- | | |
|---------------------------------|---|
| (a) दायपुर के निकट राजस्थान में | (b) इलाहाबाद के कोरांव तहसील में बूढ़ी बेलन के किनारे |
| (c) प्रतापगढ़ में | (d) मिर्जापुर में |

उत्तर (b)

G.I.C. Lect. Exam 2012

व्याख्या- मध्यपाषाणिक स्थल चोपनीमाण्डो इलाहाबाद के कोरांव तहसील में बूढ़ी बेलन के किनारे स्थित है। इस काल में लोग शिकार करके, मछली पकड़कर तथा खाद्य वस्तुएँ एकत्र कर अपना जीवन यापन करते थे। मध्य पाषाण काल में पाषाण के लघु उपकरण बनाये जाते थे। भारत में सबसे पहले लघु पाषाण उपकरण 1867 में ई.सी.एल. कर्लाइल द्वारा खोजा गया।

151.कालक्रम से लगायें :

- | | |
|--------------------|-----------------|
| (a) लौह युग | (b) कांस्य युग |
| (c) पूर्वपाषाण युग | (d) नवपाषाण युग |

कूट :

- | | |
|----------------|----------------|
| (a) 4, 2, 3, 1 | (b) 3, 2, 4, 1 |
| (c) 2, 4, 1, 3 | (d) 3, 4, 2, 1 |

उत्तर (d)

G.I.C. Lect. Exam 2015

व्याख्या- कालक्रम में सर्वप्रथम पूर्वपाषाण युग आता है। इसके बाद क्रमशः नवपाषाण युग, कांस्य युग और लौह युग है।

152.कुछ पुरातात्त्विक स्थलों की सूची नीचे दी गई है :

- | | |
|--------------|-----------|
| (1) नवदाटोली | (2) रोपड़ |
| (3) नाल | (4) कायथ |

इनमें से कौन-कौन सी मध्य भारत की ताम्र-पाषाणिक संस्कृतियाँ हैं?

- | | |
|-------------|-------------|
| (a) 1 एवं 3 | (b) 1 एवं 4 |
| (c) 2 एवं 3 | (d) 2 एवं 4 |

उत्तर-(b) Higher Edu. Exam. (Anc. History) 2014

व्याख्या- उज्जैन के निकट छोटी काली-सिन्ध के किनारे कैथा का उत्खनन दो बार हुआ है और वहाँ ताप्रपाषाणिक बस्ती के तीन चरणों का पता चलता है। बस्ती का प्रारम्भिक काल 2400 ई.पू और 2120 ई.पू के मध्य निर्धारित किया गया। नर्मदा के दक्षिणी तट पर स्थित नवदाटोली में ताप्रपाषाण बस्तियों के चार चरण प्राप्त हुए हैं जिनका काल 2020 ई.पू से 1660 ई.पू के बीच पड़ता है। यहाँ की मुख्य विशेषता चित्रित काले व लाल मृदभाण्ड हैं।

153.निम्न में से किस मध्य पाषाणकालीन पुरास्थल से मृगश्रृंग के छल्लों की माला के प्रमाण मिले हैं?

- | | |
|------------------|-----------|
| (a) दमदमा | (b) महदहा |
| (c) सरायनाहर राय | (d) पटने |

उत्तर (b) UPPCS (Pre) Indian History, 2002

व्याख्या- मध्य पाषाण काल के महदहा पुरास्थल से मृगश्रृंग के छल्लों की माला के प्रमाण मिले हैं। महदहा नामक पुरास्थल के द्वितीय उपकाल में एकाकी पुरुष कंकाल हिरण शृंगों की बनी पाँच मुद्रिकाओं की एक माला गले में पहने हुए था। युगम समाधि का पुरुष शृंगों की बनी हुई बारह मुद्रिकाओं की एक माला गले में पहने हुए था तथा बायें कान में शृंग का बना हुआ एक गोल कुण्डल धारण किये हुए था। महदहा से सींग तथा शृंग के बने उपकरण और आभूषण सरायनाहर राय की तुलना में अधिक संख्या में मिले हैं। सींग तथा शृंग के उपकरणों में बाणप्र, बेधक, खुरचनी, आरी, रुखानी, चाकू आदि हैं। शृंग के आभूषणों में कुण्डल तथा मुद्रिकाएं उल्लेखनीय हैं। महदहा से बलुआ पथर पर बने हुए टूटे हुए सिल एवं लाढ़े, गोफन-पाषाण तथा हथौड़े आदि भी मिले हैं। सिल-लोहों की प्राप्ति से यह इंगित होता है कि सम्भवतः जंगली धास के दानों को पीसकर भोज्य-सामग्री के रूप में उपयोग किया जाने लगा था। पुरापुष्पराग के विश्लेषण से हरे-भरे धास के मैदान के विषय में संकेत मिलता है।

154.निम्नलिखित में से किस नवपाषाणकालीन पुरास्थल से गर्तनिवास के प्रमाण मिलते हैं?

- | | |
|--------------|-------------------|
| (a) मार्टण्ड | (b) दाओजली हेडिंग |
| (c) बुर्जहोम | (d) चिरान्द |

उत्तर (c) UPPCS (Pre) Indian History, 2003

व्याख्या- ई.पू. तीसरी शताब्दी से ही कश्मीर में एक समृद्ध नवपाषाण संस्कृति रही है जहाँ सबसे महत्वपूर्ण स्थल का पता चला है वह है बुर्जहोम। यह आधुनिक श्रीनगर प्रांत के समीप स्थित है। इस स्थल का पहला कालखण्ड नवपाषाण युगीन है। पहले चरण में हस्तनिर्मित मृदभाण्ड जिनके तल पर चटाई के छापे बने हैं। यहाँ से तरह-तरह के अस्थि उपकरण जिनमें काँटे, आरियाँ, खुड़याँ और बछियाँ शामिल हैं और अनेक अण्डाकार या वृत्ताकार गर्भगृह जिनमें उत्तरने की सीढ़ियाँ और दीवारों में आले बने हैं। प्रवेश द्वार के पास चूल्हे हैं और चहारदीवारी के आस-पास स्तम्भगत हैं जिनमें छप्पर का संकेत मिलता है। अस्थि एवं प्रस्तर उपकरण उद्योग अगले चरण में प्रचलित रहा परन्तु अब वहाँ गारे और कच्ची ईंटों के घर, चाकू निर्मित मृदभाण्ड तथा ताँबे का सीमित प्रयोग ही देखने को मिलता है।

155.उच्च पुरापाषाण युगीन हड्डी की बनी मातृदेवी की प्रतिमा कहाँ से प्राप्त हुई है?

- | |
|------------------------------------|
| (a) उत्तर प्रदेश में बेलन धाटी से |
| (b) मध्य प्रदेश में सोन धाटी से |
| (c) मध्य प्रदेश में नर्मदा धाटी से |
| (d) महाराष्ट्र में गोदावरी धाटी से |

उत्तर (a) UPPCS (Pre) Indian History Spl., 2004

UPPCS (Pre) Indian History, 2005

UPPCS (Pre) Indian History, 2011

व्याख्या- अस्थि निर्मित मातृदेवी की मूर्ति इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) की बेलन धाटी में स्थित लोहदा नाले से प्राप्त हुई है जो उच्च पूर्व पाषाण काल की है।

156.प्रारम्भिक पूर्ण मानव को किस नाम से जाना जाता था?

- | | |
|----------------|------------------|
| (a) निएंडरथल | (b) क्रोमैग्रॉन |
| (c) ग्रिमाल्डी | (d) मैंग्डलीनियन |

उत्तर (b) UPPCS (Pre) Indian History, 2003

व्याख्या- लगभग 3.5 करोड़ से 2 करोड़ वर्ष पूर्व 3 से 4 फुट ऊँचा एक कपि समूह उच्च कटिबन्ध के घने जंगलों से बाहर निकल आया जहाँ वह वृक्षों पर रहा करता था। लगभग दो करोड़ वर्ष पूर्व यह पूर्वज समूह विभाजन की एक शाखा बन गया, इसे 'रामापिथकस' कहा जाता है। जो शाखा जंगलों में रह गयी, परन्तु धरती पर रहने के लिए अधिक अनुकूल थी, वह महाकपि वर्ग के रूप में विकसित हुई और जिसने खुलै धास के मैदान ढूँढ़ना शुरू किया उसे 'ऑस्ट्रेलोपिथेकस' कहा जाता है। 'ऑस्ट्रेलोपिथेकस' मानव का आदि पूर्वज बना और वह पूर्व अत्यंत नूतन काल में प्रकट हुआ। आरंभिक मध्य-अत्यंत नूतन काल में विश्व के अनेक भागों में अधिक विकसित मानव जाति का आविर्भाव हुआ, इसे हम 'पिथैकेन्थोपस' या 'इरेक्टस' कहते हैं। निएंडरथल मानव मध्य में अर्थात् अत्यंत नूतन काल के अंत में तथा उत्तर अत्यंत नूतन काल के आरम्भ में प्रकट हुआ। लगभग 30,000 वर्ष पहले 'आधुनिक मानव' का विकास हुआ। उसे हम 'होमोसेपियन्स' या 'प्रज्ञ मानव' या विशिष्ट अनुसंधान नामों से पुकारते हैं जैसे कि 'क्रोमैग्रॉन', 'चांसलेड ग्रीमाल्डी' इत्यादि।

157.सूची I को सूची- II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-

सूची I

- | |
|------------------|
| (a) सरायनाहर राय |
| (b) पटने |
| (c) सैपाई |
| (d) महुरझारी |

कूट:

| A | B | C | D |
|-------|---|---|---|
| (a) 4 | 1 | 2 | 3 |
| (b) 1 | 2 | 3 | 4 |
| (c) 4 | 3 | 2 | 1 |
| (d) 1 | 4 | 2 | 3 |

उत्तर (a) UPPCS (Pre) Indian History Spl., 2004

व्याख्या- पुरास्थलों का संस्कृतियों से सुमेलित सूची इस प्रकार है सराय नाहर राय-मध्यपाषाण युगीन, पटने- उच्च पूर्व पाषाणिक, सैपाई- गैरिक मृदभाण्ड परम्परा, महुरझारी-महाश्मसमाधि।

158.आप्ती संस्कृति कहाँ विकसित हुई?

- | | |
|-----------------|-----------|
| (a) अफगानिस्तान | (b) सिन्ध |
| (c) ब्लूचिस्तान | (d) कच्छ |

उत्तर (b) UPPCS (Pre) Indian History Spl., 2004

व्याख्या- आप्ती संस्कृति पाकिस्तान के सिन्ध प्राप्त से विकसित हुई इसके अलावा सिन्ध प्रान्त में मोहनजोदहों, चन्हूदहों, जुदरीडोह, कोटदीजी, अलीमुराद आदि स्थल भी थे।

159.पशुपालन का प्राचीनतम साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुआ है?

- | | |
|---------------------|-----------------|
| (a) सरायनाहर राय से | (b) कोलिडहवा से |
| (c) बागोर से | (d) कालीबंगा से |

उत्तर (c) UPPCS (Pre) Indian History, 2004

व्याख्या- दो मध्यपाषाणिक स्थल मध्य प्रदेश में होशंगाबाद के निकट आदमगढ़ और दूसरा राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में बागोर है। इन दोनों की तिथि ई. पूर्व 5000 के आसपास निर्धारित की गयी है। इन दोनों में मवेशियों और भेड़-बकरियों के पालन का साक्ष्य प्राप्त होता है। सम्भव है इन दोनों भिन्न-भिन्न इलाकों के दोनों स्थलों से कृषि का साक्ष्य भी प्राप्त हो जाए, परन्तु ऐसी कोई निश्चित खोज अभी तक नहीं हुई है। सरायनाहर राय प्रतापगढ़ जिले में (इलाहाबाद से 50 किमी. के भीतर) महत्वपूर्ण स्थल है। सरायनाहर राय की रेडियो कार्बन तिथि ई. पूर्व 8395 पाई गयी है। यह पहला स्थल है जहाँ से स्तम्भ गर्त का साक्ष्य पाया गया है। आवास के लिए झोपड़ियाँ बनायी गयी होंगी। सरायनाहर से मानवीय आक्रमण या युद्ध का अन्यन्त महत्वपूर्ण साक्ष्य भी प्राप्त हुआ है। एक शवाधान में कंकाल के शिरोअस्ति में एक सूक्ष्म पाषाण डड़ा हुआ मिला है जो सूक्ष्म पाषाण प्राप्त हुए हैं, उनमें बहुत ही कम ज्यामितीय रूप मिले हैं और वे प्रारूप तकनीकी की दृष्टि से बागोर में पाये गये उत्कृष्ट रूपों की अपेक्षा कहीं ज्यादा पुराने मालूम होते हैं।

160. प्रागैतिहासिक काल का कौन-सा स्थल 'ताम्बवती' नाम से प्रसिद्ध है?

- | | |
|-----------|-------------|
| (a) कायथ | (b) गिलुन्द |
| (c) अहाड़ | (d) महेश्वर |
- उत्तर : (c) **UPPCS (Pre) Indian History, 2004**

व्याख्या- अहाड़ का प्राचीन नाम ताम्बवती है। यह स्थान अरावली पर्वत मालाओं से घिरा हुआ है जो उदयपुर के पूर्व में अहाड़ नदी के किनारे पर बसा है। अभिलेखों में इसी को घाटपुर कहा गया है। खुदाई में यहाँ एक बड़ी भट्ठी और ताँबे का सामान मिला है जिससे पता चलता है कि यहाँ ताँबा गलाने और बर्तन का काम होता था। यह स्थान आठ बार बसा है हर बार लोग एक दूसरे स्थान पर बसे। चौथी बार में ही ताँबे का सामान मिला है। ताँबे के औजार दीवारों के मलबों में मिले हैं। धूप में सुखाई हुई कच्ची ईटों और पत्थरों से मकान बनते थे। घर काफी बड़े होते थे। खुदाई में एक ही जगह लाइन में अनेक चूल्हे मिले हैं। लगता है ये एक ही परिवार के थे। तरह-तरह की आकृतियों के मसाला पीसने के पत्थर मिले हैं। यहाँ द्वितीय काल के सिक्के और सीलों भी मिली हैं उन पर ब्राह्मी लिपि में लिखा है। मिट्टी और पत्थर के मनके मिले हैं, जिन पर चिकारी की गयी है।

161. निम्नलिखित में से कौन-सा वर्तव्य सही नहीं है?

- | |
|--|
| (a) भारत में पाषाणकालीन मानव जीवाश्म प्राप्त नहीं हुए हैं |
| (b) पुरापाषाणकालीन उपकरणों पर मानव गतिविधियाँ प्राप्त नहीं हुई हैं |
| (c) नवपाषाण काल में मानव समाज की रचना नहीं हुई थी |
| (d) प्रागैतिहासिक शैलाश्रयों में मानव गतिविधियाँ चित्रित नहीं हैं |
- उत्तर : (d) **UPPCS (Pre) Indian History, 2004**

व्याख्या- पूर्व पुरापाषाणिक स्थल भीमबेटा जो कि नर्मदा घाटी (मध्य प्रदेश जिला रायसेन) में स्थित है, की गुफाओं में मानव गतिविधियाँ चित्रित हैं। भीमबेटा से ऐसे लोगों की आबादी का संकेत मिलता है जो विदार्णियों के निर्माण में अत्यन्त कुशल एवं अनुभवी थे। उनके शल्य उपकरण बहुत सारे और तरह-तरह के हैं और वे पश्चिमी यूरोपीय मध्य पुरापाषाण काल से भी खूब मिलते-जुलते हैं। हस्तकुठार बहुत बढ़िया ढंग से बनाए गये हैं जो कि छाटे-छोटे और चिपटे हैं अतः इसमें कोई संदेह नहीं कि इन स्तरों पर यथार्थ पर्वर्ती रोशूली लोगों का समूह आबाद था परन्तु वहाँ

कोई एक भी गँड़ासा या एबीबेली हस्तकुठार नहीं मिला है। इससे इस बात का पर्याप्त संकेत मिल जाना चाहिए कि नर्मदा निक्षेप पुराने समय को विविध संस्कृतियों के प्रतिनिधि हो सकते हैं जिनके साथ नये समूह भी मिले हैं। ऐश्वूली उपकरणों की विकसित प्रकृति इस संस्कृति की परवर्ती कालानुक्रमिक स्थिति के साथ बहुत मेल खाती है और यहाँ इसकी तुलना पश्चिमी यूरोप से कर सकते हैं।

162. निम्नलिखित में से किस मध्य पाषाणिक स्थल से हड्डी के बने आभूषण प्राप्त हुए हैं?

- | | |
|---------------|-------------|
| (a) बगोर | (b) बघोर II |
| (c) बीरभानपुर | (d) महदहा |

उत्तर : (d) **UPPCS (Pre) Indian History, 2005**

व्याख्या- महदहा एक मध्य पाषाण काल से मानव के अस्थिपंजर का सबसे पहला अवशेष महदहा (प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश) नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। महदहा से सींग तथा शृंग के बने उपकरण और आभूषण सरायनाहर राय की तुलना में अधिक संख्या में मिले हैं। सींग तथा शृंग के उपकरणों में बाणग्र, बेधक, खुरचनी, आरी, रुखानी, चाक आदि हैं। शृंग के आभूषणों में कुण्डल तथा मुद्रिकाएँ उल्लेखनीय हैं। महदहा से बलुआ पत्थर से बने हुए टूटे हुए सिल एवं लोडे, गोफन-पाषाण तथा हथौड़ा आदि भी मिले हैं। सिल-लोडों की प्राप्ति से यह इंगित होता है कि संभवतः जंगली घास के दानों को पीसकर भोज्य-सामग्री के रूप में उपयोग किया जाने लगा था। पुरापुष्पराग के विश्लेषण से हरे-भरे घास के मैदान के विषय में संकेत मिलता है।

163. दक्षिण भारत की बृहद् पाषाण समाधियाँ सम्बन्धित हैं :

- | | |
|------------------------|---------------------|
| (a) पूर्व पाषाण काल से | (b) नव पाषाण काल से |
| (c) ताम्र पाषाण काल से | (d) लौह काल से |

उत्तर : (d) **UPPCS (Pre) Indian History, 2006**

व्याख्या : दक्षिणी भारत में पाषाण युग के बाद दक्षकन के पठार तथा सुदूर प्रायद्वीप में महापाषाण संस्कृति का उदय हुआ। यह संस्कृति एक हद तक भारत के पूर्वी मध्य तथा उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में भी पाई जाती है। किन्तु दक्षिणी भारत के संदर्भ में इसका विशेष महत्व है। महापाषाणीय संस्कृति की ऐतिहासिक महत्व की दो विशेषताएँ हैं-(a) इसका लौह युग से अविरल रूप से जुड़ा होना। (b) काले एवं लाल मृदभाण्डों के आविर्भाव से संयुक्त होना।

164. 'सिहावल' एक पुरास्थल है :

- | |
|-----------------------------------|
| (a) निम्न पूर्व पाषाण संस्कृति का |
| (b) मध्य पूर्व पाषाण संस्कृति का |
| (c) उच्च पूर्व पाषाण संस्कृति का |
| (d) मध्य पाषाण संस्कृति का |

उत्तर : (a) **UPPCS (Pre) Indian History, 2006**

व्याख्या : निम्न पुरापाषाणकाल से सम्बन्धित 30 से अधिक पुरास्थल अब तक प्रकाश में आ चुके हैं। मध्य सोन घाटी के सिहावल जमाव से निम्न पुरापाषाणकाल के उपकरण प्राप्त हुए हैं। सोन नदी के सबसे निचले व पुराने जमाव को सिहावल जमाव इसलिए कहा गया है क्योंकि सिहावल नामक पुरास्थल के पास इसका सबसे अच्छा जमाव है, जहाँ इसका अध्ययन किया गया है।

165. राख के टीले किस क्षेत्र की नवपाषाणिक संस्कृति से सम्बन्धित हैं?

- | | |
|----------------------------|-----------------|
| (a) पूर्वी भारत | (b) दक्षिण भारत |
| (c) उत्तरी विन्ध्य क्षेत्र | (d) कश्मीर घाटी |

उत्तर : (b) **UPPCS (Pre) Indian History, 2006**

व्याख्या : दक्षिण भारत में स्थित ग्राम्य जीवन की आधार-रेखा नव-पाषाणकालीन संस्कृति से प्राप्त होती है। खेती की फसलों में बाजरा और चना मिला है। मवेशियों, भेड़-बकरियों के विस्तृत अवशेष तथा अन्य पशुओं की अस्थियाँ मिली हैं, जिनसे अर्थव्यवस्था में पालतू-पशुओं के महत्व का संकेत मिलता है। इस संस्कृति के लोग अपने मर्वेशियों को संभवतः प्रत्येक वर्ष की किसी कालावधि में अपने घरों के बाहर बाँध देते थे। जिस इलाके में मवेशी रखे जाते थे, उसमें लकड़ी के डंडों की बाड़ लगा दी जाती थी। बाड़ के भीतर जो गोबर एकत्र होता था उसे प्रतिवर्ष बाड़ के डंडों के साथ ही जला दिया जाता था। यह जलाने का कार्य संभवतः पोंगल समारोह के आस-पास किया जाता था, जो मकर-संक्रान्ति को पड़ता है। प्रतिवर्ष इस प्रक्रिया की लगातार पुनरावृत्ति का परिणाम यह हुआ कि जिस जगह वह होली जलाई जाती थी, वहाँ राख का एक टीला बन गया है। दक्षिण भारतीय पुरातत्व में इन टीलों को भस्म टीले (Ash mounds) कहा जाता है।

166. निम्न पुरास्थलों में से किस एक में भारत के प्रारौतिहासिक मानव का प्राचीनतम जीवाशम मिला है?

- | | |
|-------------------|------------|
| (a) भीमबेटा | (b) हथनौरा |
| (c) सराय नाहर राय | (d) दमदमा |

उत्तर : (b) UPPCS (Pre) Indian History, 2006

UPPCS (Pre) Indian History Spl., 2008

व्याख्या : मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित हथनौरा से मानव की खोपड़ी का एक जीवाशम मिला है, कुछ विद्वानों ने इसे होमोइरेक्टस तथा कुछ ने विकसित होमोसेपियन्स वर्ग के अन्तर्गत रखा है।

भीमबेटका-रायसेन (म. प्र.) में स्थित है। इस पुरास्थल का क्षेत्र गुफाओं एवं शिलाश्रयों के लिए प्रसिद्ध है, जिनकी संख्या यहाँ लगभग 500 है। भीमबेटका की गुफाओं को खोजने का श्रेय बी.एस. वाकणकर को है। यहाँ के अधिकांश शिलाश्रयों में मध्यपाषाणिक संस्कृति के पुरावशेष व समकालीन चित्रकला के साक्ष्य मिलते हैं।

सराय नाहर राय व दमदमा प्रतापगढ़ जिले में स्थित मध्य पाषाणकालीन पुरास्थल है।

167. पूर्वपाषाणकालीन मानव का मुख्य धंधा था :

- | | |
|-------------|---------------------------|
| (a) कृषि | (b) मिट्टी के बर्तन बनाना |
| (c) पशुपालन | (d) शिकार खेलना |

उत्तर : (d) UPPCS (Pre) Indian History, 2006

व्याख्या : पूर्वपाषाणकालीन मनुष्य का जीवन पूर्णतया प्राकृतिक था। वे प्रधानतः आखेट पर निर्भर करते थे। उनका भोजन मांस या कन्दमूल हुआ करता था। अग्नि के प्रयोग से अपरिचित रहने के कारण वे मांस कच्चा खाते थे। उनके पास कोई निश्चित निवास-स्थान भी नहीं था तथा उनका जीवन खानाबदेश अथवा घुमकड़ था। सभ्यता के इस आदिम युग में मनुष्य कृषि कर्म या पशुपालन से परिचित नहीं था और न ही वह बर्तनों का निर्माण करना जानता था। इस काल का मानव केवल खाद्य पदार्थों का उपभोक्ता ही था। वह अभी तक उत्पादक नहीं बन सका था। मनुष्य तथा जंगली जीवों के रहन-सहन में कोई अन्तर नहीं था।

168. सराय नाहर राय और महदहा सम्बन्धित हैं -

- | |
|---|
| (a) विन्ध्य क्षेत्र की नव-पाषाण संस्कृति से |
| (b) विन्ध्य क्षेत्र की मध्य-पाषाण संस्कृति से |
| (c) गंगा घाटी की मध्य-पाषाण संस्कृति से |
| (d) गंगा घाटी की नव-पाषाण संस्कृति से |

उत्तर-(c) UPPCS (Pre) Indian History, 2007

व्याख्या- सरायनाहर राय और महदहा गंगा घाटी की मध्य पाषाण संस्कृति से सम्बन्धित है। इसमें से सराय नाहर राय प्रतापगढ़ जिले में स्थित है जिसकी खोज के सी. ओझा ने की थी। यहाँ से 11 मानव समाधियों तथा 8 गर्त चूल्हे पाये गये हैं। यहाँ एक समाधि ऐसी है जिसमें एक साथ चार-चार मानवों को लिटाया गया है। ‘महदहा’ नामक मध्य पाषाणिक स्थल भी प्रतापगढ़ जिले में स्थित है जिसकी खोज इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग तथा पट्टी तहसील के तत्कालीन परगानाधिकारी लाल बिहारी पाण्डेय के सौजन्य से हुई थी। यहाँ से भी मानव समाधियाँ प्राप्त हुई हैं। यहाँ से मानव समाधियों के अतिरिक्त पशुओं की अधजली हड्डियाँ, शृंग आदि भी प्राप्त हुई हैं जिसके कारण इसे वध-स्थल कहा गया है।

169. प्राचीनतम कलाकृतियों का प्रमाण सम्बन्धित है-

- | |
|------------------------------|
| (a) निम्न पूर्व पाषाण काल से |
| (b) मध्य पूर्व पाषाण काल से |
| (c) उच्च पूर्व पाषाण काल से |
| (d) मध्य पाषाण काल से |

उत्तर-(c) UPPCS (Pre) Indian History, 2007

व्याख्या - प्राचीनतम कलाकृतियों का सम्बन्ध उच्च पुरापाषाण तथा मध्यपाषाण काल से स्थापित किया गया है क्योंकि इस वर्ग की चित्रकला के वर्ण-विषय उच्च पुरापाषाणिक तथा मध्य पाषाणिक काल के मानव के आर्थिक क्रिया-कलाओं, सामाजिक एवं सांस्कृतिक रीति-रिवाजों से बहुत कुछ मेल खाते हैं। प्रमुख कलाकृतियों में पशुओं को दौड़ते, उछलते-कूदते, चरते, खड़े अथवा शिकारियों द्वारा पीछा करते अथवा घात लगाकर शिकार करते हुए दिखाया गया है।

170. निम्न पूर्व पाषाण काल के मानव के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा तथ्य सही है?

- | |
|---|
| (a) वह पालिशदार कुल्हाड़ियों का प्रयोग करता था। |
| (b) वह कोर-उपकरणों का प्रयोग करता था। |
| (c) वह पशु पालक था। |
| (d) वह लघु पाषाण उपकरणों का प्रयोग करता था। |

उत्तर - (b) UPPCS (Pre) Indian History, 2007

व्याख्या- पाषाणयुगीन सभ्यता का विकास हिम-युग या प्लाइस्टोसीन काल में हुआ। भारत में पाषाणयुगीन मानव के मुख्य उद्योग लघु पाषाण उपकरण, शल्क उपकरण तथा हस्तकुठार तक ही सीमित थे। उपकरण बनाने में मुख्यतः क्वाट्र्ज अथवा स्फटिक का उपयोग किया गया है। ये पाषाण उपकरण सर्वप्रथम सोहन घाटी में पाये गये। अतः इन्हें ‘सोहन संस्कृति’ के नाम से भी पुकारा जाता है। इस काल में मानव कोर-उपकरणों का प्रयोग करता था। वह न तो किसी धातु का प्रयोग करता था और न ही पशुपालक था, बल्कि जीवन यापन के लिए शिकार पर निर्भर था।

171. ‘होमो एरेक्टस’ का एक कपाल निम्न में से किस स्थल से प्राप्त हुआ था?

- | | |
|----------------------------|-------------------------------|
| (a) नर्मदा घाटी में हथनौरा | (b) नर्मदा घाटी में होशंगाबाद |
| (c) सोनघाटी में बाघोर | (d) बेलन घाटी में बांस घाट |

उत्तर-(a) UPPCS (Pre) Indian History, 2008

व्याख्या- भारतीय भूतत्व सर्वेक्षण के अरुण सोनकिया को मध्य नर्मदा घाटी में होशंगाबाद जिले में स्थित हथनौरा नामक पुरास्थल से मानव की एक खोपड़ी का जीवाशम मिला है। कुछ विद्वानों ने इसे ‘होमो एरेक्टस’ वर्ग के अन्तर्गत रखा है तथा अन्य इसे ‘विकसित होमो सेपियन्स’ बताते हैं।

172. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

सूची-I

- A. बीरभानपुर
- B. उज्जैन
- C. कायथा
- D. अहाड़

कूट :

| A | B | C | D |
|-------|---|---|---|
| (a) 3 | 4 | 2 | 1 |
| (c) 2 | 3 | 4 | 1 |

सूची-II

- 1. बनास संस्कृति
- 2. ताम्र निधि
- 3. गैरिक मृदभाण्ड परम्परा
- 4. लघुपाषाण उपकरण

उत्तर-(b) UPPCS (Pre) Indian History, 2007

व्याख्या - बीरभानपुर नामक मध्य पाषाणिक पुरास्थल पश्चिम बंगाल के बर्दवान जिले में दुर्गापुर के समीप दामोदर नदी के बायें तट पर स्थित है जिसकी खोज 1954ई. में बी. बी. लाल द्वारा की गयी। यहाँ उत्खनन से लघु पाषाण उपकरण प्राप्त हुए हैं। उज्जैन (मध्य प्रदेश) में मालवा संस्कृति से सम्बन्धित एक प्रमुख पुरास्थल है। यहाँ से उत्खनन के दौरान अनेक प्रकार के पात्र परम्पराएँ प्रकाश में आयी हैं जिसमें तसले, छिल्ली थालियाँ, लोटे, मटके आदि प्रमुख हैं। ये मुख्य रूप से 'गैरिक मृदभाण्ड परम्परा' का प्रतिनिधित्व करते हैं। कायथा नामक पुरास्थल उज्जैन जिले में स्थित है। सम्पर्क : इसी पुरास्थल को भारतीय साहित्य में वाराहमिहिर की जन्मभूमि 'कपित्थक' के नाम से जाना जाता है। यहाँ उत्खनन से 'ताप्रनिधि' प्राप्त हुई है। अहाड़ संस्कृति की जानकारी सबसे पहले 1952-53ई. में रतन चन्द्र अग्रवाल द्वारा राजस्थान के उदयपुर नगर की खुदायी के दौरान प्राप्त हुई जहाँ से ताम्र पाषाणिक संस्कृति के अनेक पुरातात्त्विक साक्ष्य प्राप्त हुए। चूँकि इस संस्कृति से सम्बन्धित बहुसंख्यक पुरास्थल दक्षिण-पूर्व राजस्थान में बनास और उसकी सहायक नदियों की घाटियों में ही स्थित है। इसीलिए इस संस्कृति को 'बनास संस्कृति' भी कहा जाता है। उपरोक्त तथ्यों के अनुसार इस प्रश्न का उत्तर (b) होगा।

173. निम्नलिखित में से कौन-सा सही सुमेलित नहीं है?

- (a) कायथा - कर्नटिक
- (b) चिरांद - बिहार
- (c) पाण्डुराजारढिबि - बंगाल
- (d) दायमाबाद - महाराष्ट्र

उत्तर - (a) UPPCS (Pre) Indian History, 2007

व्याख्या - कायथा नामक पुरास्थल मध्य प्रदेश के उज्जैन जिले में स्थित है। भारतीय साहित्य में इसे वाराहमिहिर की जन्मभूमि 'कपित्थक' के रूप में पहचाना गया है। यहाँ उत्खनन से 'ताप्रनिधियाँ' प्राप्त हुई हैं। 'चिरांद' बिहार के सारण जिले में स्थित एक नवपाषाणिक स्थल है जहाँ उत्खनन से आवास, मिट्टी के बर्तन, छोटे आकार एवम् गोल समनान्त वाली कतिपय कुल्हाड़ियाँ प्राप्त हुई हैं। अन्य प्रस्तर उपकरणों में सिल-लोड़े, हथौड़े तथा गोफन-पाषाण आदि का उल्लेख किया जा सकता है। यहाँ की एक अन्य विशेषता हड्डी तथा शृंग पर बने उपकरण हैं। पाण्डुराजारढेरी पश्चिम बंगाल में स्थित एक प्रमुख आद्य-ऐतिहासिक पुरास्थल है जहाँ से आद्य-ऐतिहासिक काल के कुछ प्रमुख पुरातात्त्विक साक्ष्य मिले हैं। दायमाबाद महाराष्ट्र में स्थित एक प्रमुख पुरास्थल है जहाँ के उत्खनन से गेंडा, एक हाथी, एक भैंसा, एक रथ आदि प्राप्त हुए हैं।

174. नवपाषाण कालीन गर्त-निवासों के अवशेष कहाँ से मिले थे?

- | | |
|-------------|------------|
| 1. बुर्जहोम | 2. गुफकराल |
| 3. कुचई | 4. महगड़ा |
- नीचे के कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (a) 1 एवं 4
- (b) 2 एवं 3
- (c) 3 एवं 4
- (d) 1 एवं 2

उत्तर-(d) UPPCS (Pre) Indian History, 2008

व्याख्या-उत्तरी भारत में नवपाषाण काल के पुरावशेष जम्मू-कश्मीर प्रदेश में ज़ेलम की घाटी में स्थित विभिन्न पुरास्थलों से प्राप्त हुए हैं। बुर्जहोम और गुफकराल के उत्खनन से गर्त-निवासों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। बुर्जहोम में जो सबसे बड़ा गड्ढा है, उसका व्यास मुँह पर 2.74 मीटर तथा पेंदे में 4.57 मीटर है।

175. मध्यपाषाणिक संदर्भ में वन्य धान का प्रमाण कहाँ से मिला था?

- (a) चोपानीमाण्डो
- (b) सराय नाहर राय
- (c) लेखहिया
- (d) लंघनाज

उत्तर - (a) UPPCS (Pre) Indian History Spl., 2008

व्याख्या - मध्यपाषाणिक संदर्भ में वन्य धान का प्रमाण 'चोपानी माण्डो' से मिला है। यह पुरास्थल इलाहाबाद जिले की मेजा तहसील में बूढ़ी बेलन नदी के बायें तट पर स्थित है। इस पुरास्थल को खोजने का श्रेय 1967 में श्री बी.डी. मिश्र को है।

176. निम्नलिखित में से किसे भारत में 'प्रागैतिहासिक पुरातत्त्व का जनक' कहा गया है ?

- (a) एच.डी. सांकलिया
- (b) ए. कनिंघम
- (c) ए. आर. अलचिन
- (d) राबर्ट ब्रूस फूट

उत्तर - (d) UPPCS (Pre) Indian History Spl., 2008

PGT History, 2004

Asharam Paddhati Lect. Exam. 2009

L.T. Grade Exam. 2018

व्याख्या - प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता और भूवैज्ञानिक राबर्ट ब्रूस फूट को भारत में प्रागैतिहासिक पुरातत्त्व का जनक कहा गया है जबकि ए. कनिंघम को भारत में पुरातत्त्व का जनक माना जाता है। राबर्ट ब्रूस फूट ने ही भारत में प्रथम पूर्व पाषाणिक उपकरण की खोज की थी।

177. निम्नलिखित में से किसे 'फलक संस्कृति' कहा गया है?

- (a) निम्न पुरापाषाणकालीन संस्कृति
- (b) मध्य पुरापाषणकालीन संस्कृति
- (c) उच्च पुरापाषणकालीन संस्कृति
- (d) हड्डपा संस्कृति

उत्तर - (b) UPPCS (Pre) Indian History Spl., 2008

व्याख्या - भारत के विभिन्न भागों से जो फलक प्रधान पूर्व पाषाण काल के उपकरण मिलते हैं, उन्हें इस काल के मध्य में खा जाता है। फलकों की अधिकता के कारण, मध्य पूर्वपाषाण काल को 'फलक संस्कृति' की संज्ञा दी जाती है। इन उपकरणों का निर्माण अच्छे प्रकार के क्वार्टजाइट पत्थर से किया गया है। इनमें चट्ट, जैस्पर, फिलन्ट जैसे मूल्यवान पत्थरों को लगाया गया है।

178. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए :

सूची-I

- A. पुरापाषण काल
- B. मध्यपाषण काल
- C. नवपाषण काल
- D. ताप्रापाषण काल

कूट :

A B C D

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| (a) (i) (ii) (iii) (iv) | (b) (ii) (iii) (iv) (i) |
| (c) (iii) (iv) (i) (ii) | (d) (iii) (ii) (iv) (i) |

उत्तर - (b) UPPCS (Pre) Indian History Spl., 2008

सूची-II

- (i) कच्चे एवं पक्के मकान
- (ii) नदी तट अधिवास
- (iii) शैलाश्रय अधिवास
- (iv) गर्त अधिवास

व्याख्या -

- A. पुरापाषण काल - नदी तट अधिवास
- B. मध्यपाषण काल - शैलाश्रय अधिवास
- C. नवपाषण काल - गर्त अधिवास
- D. ताप्रापाषण काल - कच्चे एवं पक्के मकान

179. रॉबर्ट ब्रूसफुट, जिन्होंने भारत में प्रथम पूर्व पाषाणिक उपकरण की खोज की, मूलतः थे-

- (a) एक पुरावनस्पतिशास्त्री (b) एक भू-वैज्ञानिक
- (c) एक पुरातत्वविद् (d) एक इतिहासकार

उत्तर - (b) UPPCS (Pre) Indian History, 2009

व्याख्या -

भारत में पाषाणिकोंन सभ्यता का अनुसंधान सर्वप्रथम 1863 ई. में प्रारम्भ हुआ, जब भारतीय भूतत्व सर्वेक्षण विभाग के विद्वान रार्बर्ट ब्रूसफुट ने मद्रास के पास स्थित पल्लवरम् नामक स्थान से पूर्वपाषण काल का एक पाषाणोपकरण प्राप्त किया। रॉबर्ट ब्रूसफुट एक भू-वैज्ञानिक एवं पुरातत्वविद् दोनों थे। आयोग द्वारा इस प्रश्न का उत्तर (b) माना गया है।

180. संघावों गुफा पुरास्थल है-

- (a) निम्न पुरापाषण काल का (b) मध्य पुरापाषण काल का
- (c) नव-पाषण काल का (d) ताप्रा पाषण काल का

उत्तर - (b) UPPCS (Pre) Indian History, 2011

व्याख्या -

सिन्धु और झेलम नदियों के बीच पोटवार पठार क्षेत्र एवं पाकिस्तान के उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत के संघाओं गुफाओं से मध्यपुरापाषण काल से लेकर उच्च पुरापाषण काल तक तीन मीटर से ज्यादा मोटे निक्षेप के अवशेष प्राप्त हुए हैं। यहाँ से पत्थर के औजारों के साथ ही मानव एवं पशुओं की हड्डियों के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं।

181. निम्नलिखित में से किस शिलाश्रय से मानव शवाधान के प्रमाण मिले हैं?

- (a) मोरहना (b) लेखहिया शिलाश्रय प्रथम
- (c) धनुही (d) धधरिया

उत्तर - (b) UPPCS (Pre) Indian History, 2011

व्याख्या -

लेखहिया के शिलाश्रय संख्या 1 से मध्य पाषाणिक लघु पाषण उपकरणों के अतिरिक्त सत्रह मानव कंकाल प्राप्त हुए हैं जिनमें से कुछ सुरक्षित हालत में हैं तथा अधिकांश क्षति-विक्षत हैं। स्तरीकरण एवं अतिव्याप्ति के आधार पर 17 में से 14 कंकालों को 8 उपकालों में विभाजित किया गया है। अधिकांश विस्तीर्ण शवाधान हैं।

182. गंगाघाटी की नरहन संस्कृति सम्बन्धित है :

- (a) मध्यपाषाणिक से (b) नवपाषाणिक से
- (c) ताप्रापाषाणिक से (d) प्रारम्भिक ऐतिहासिक से

GIC प्रवक्ता परीक्षा, 2018

Ans. (c) : गंगाघाटी की नरहन संस्कृति ताप्रापाषाणिकाल से सम्बन्धित थी। नरहन से दूसरी शताब्दी ई.पू. से लेकर सातवीं शताब्दी ई.पू. तक पुरातात्त्विक स्तर विन्यास प्राप्त हुए हैं। नरहन संस्कृति (सरयू, घाघरा नदी घाटी) से काले, लाल मृदभाण्ड, हड्डियों के औजार, मनके, मृदभाण्ड टरटरी एवं पॉलिशदार हस्तकुठार, स्तम्भर्गत और चूल्हों के साथ नरकुल व मिट्टी के मकानों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। यहाँ पर वृहद् पैमाने पर उत्खनन कार्य पुरुषोत्तम सिंह के नेतृत्व में किया गया।

183. भारत में प्रथम पुरा प्रस्तर युगीन औजार की खोज का, जिससे देश में प्रागैतिहासिक अध्ययन का रास्ता खुला, श्रेय किसे जाता है?

- (a) बर्किट (b) डे टेरा एवं पैटर्सन
- (c) आर. बी. फूट (d) एच. डी. सांकलिया

उत्तर - (c) UPPCS (Pre) Indian History, 2010

व्याख्या - रार्बर्ट ब्रूसफूट को भारतीय प्रागैतिहासिक काल का जनक कहा जाता है। 1863 में रार्बर्ट ब्रूसफूट ने सबसे पहले पुरा प्रस्तर युगीन प्रथम हैंडल एक्स की खोज मद्रास के पल्लवरम् से की थी। जिसके फलस्वरूप भारत में प्रागैतिहासिक काल के अध्ययन का रास्ता खुल गया। बर्किट और डे टेरा एवं पैटर्सन महोदय भी प्रागैतिहासिक काल के अनुसंधानकर्ता हैं जबकि एच. डी. सांकलिया सिन्धु सभ्यता से सम्बन्धित पुरातत्ववेत्ता हैं।

184. निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में पुरापाषण काल, मध्य पाषण काल और नवपाषण काल के अवशेष एक क्रम में पाये गये हैं?

- (a) कश्मीर घाटी (b) कृष्णा घाटी
- (c) बेलन घाटी (d) गोदावरी घाटी

उत्तर - (c) UPPCS (Pre) Indian History, 2010

व्याख्या - बेलन घाटी, विन्ध्य क्षेत्र एवं नर्मदा घाटी से पुरापाषण, मध्यपाषण और नवपाषण काल तीनों के अवशेष पाये जाते हैं। यहाँ पर शिकारी मानव सभ्यता से लेकर अनोत्पादक मानव सभ्यता के चिन्ह पाये जाते हैं जो किसी सभ्यता के क्रमिक विकास के शृंखलाबद्ध लक्षण हैं।

185. इनामगाँव भारत के किस राज्य में स्थित है?

- (a) मध्य प्रदेश (b) आन्ध्र प्रदेश
- (c) महाराष्ट्र (d) गुजरात

उत्तर - (c) UPPCS (Pre) Indian History, 2010

व्याख्या - 1600 ई. पू. के दौरान महाराष्ट्र में कई मानव बस्तियाँ प्रकाश में आयीं। जिसमें प्रकाश (धुलिया जिला) दायमाबाद (अहमदनगर जिला), इनामगाँव (पुणे जिला) सबसे बड़ी मानवीय बस्तियाँ थीं। जहाँ पर सर्वप्रथम मालवा संस्कृति और बाद में जोर्वे संस्कृति का विकास हुआ।

186. प्राचीन भारत की जोर्वे संस्कृति निम्नलिखित राज्यों में से किस स्थान के नाम पर ही नामित की गई है?

- (a) राजस्थान (b) गुजरात
- (c) कर्नाटक (d) महाराष्ट्र

TGT - 2016

Ans : (d) प्राचीन भारत की जोर्वे संस्कृति महाराष्ट्र से सम्बन्धित है। महाराष्ट्र में पायी गयी जोर्वे बस्तियों में एक तरह का निवासगत अधिक्रम (ऊँच-नीच का क्रम) दिखाई देता है। इससे यहाँ द्विस्तरीय निवास का अभ्यास मिलता है। जोर्वे पश्चिमी महाराष्ट्र में स्थित है।